वर्ष 24, अंक 286, पृष्ठ 08, मूल्यः 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज | बुधवार 23 अप्रैल 2025 | विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

पहलगाम में आतंकी हमला

28 पर्यटकों की मौत, 20 से अधिक घायल

जम्मू-कश्मीर के चप्पे-चप्पे पर हाई अलर्ट, मिनी स्विटजरलैंड बना निशाना

अखंड भारत संदेश

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के मशहूर पर्यटन स्थल पहलगाम में मंगलवार को आतंकियों ने टूरिस्टों को निशाना बनाया। इस हमले में अब तक 28 मौतें हुई हैं, जिनमें ज्यादातर टूरिस्ट हैं। मृतकों में दो विदेशी और दो स्थानीय लोग भी बताए जा रहे हैं। यह 2019 के पुलवामा हमले के बाद घाटी में सबसे घातक आतंकी हमला है। इस केंद्रशासित प्रदेश के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने इसे हाल के वर्षों में आम लोगों पर हुआ सबसे बड़ा हमला बताया। आतंकियों की तलाश में सेना जुट गई है। लोगों की मदद के लिए हेल्पलाइन नंबर्स जारी किए गए हैं। वहीं केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह हाई लेवल मीटिंग के लिए भी पहुंच रहे हैं।

सेना व पुलिस की वर्दी में थे आतंकी

आतंकी सैनिकों और पुलिस जैसी वर्दी में थे। इस हमले में टूरिस्टों के साथ स्थानीय लोग भी घायल हुए। कुछ घोड़ों को भी गोली लगी है। लोगों ने आतंकियों की संख्या पांच बताई है। खबर फैलते ही पाकिस्तान स्थित आतंकी गुट लश्कर-ए-तैबा के मुखौटा संगठन ह्यद रेजिस्टेंस फ्रंटह्न यानी ळफ्रने इस आतंकी हमले की जिम्मेदारी ली है। टीआरएफ ने एक पेज के संदेश में यह भी लिखा है कि जम्मू-कश्मीर में गैर स्थानीय लोगों को बसाया जा रहा है। यहां अवैध रूप से बसने की कोशिश करने वाले बाहरी लोगों के खिलाफ ऐसे ही हिंसा की जाएगी।

हेल्प लाइन जारी

स्थानीय प्रशासन ने श्रीनगर में इमरजेंसी कंट्रोल रूम बनाया है और लोगों की मदद के लिए फोन नंबर भी जारी किए हैं। ये हैं 0194-2457543, 0194-2483651 और मोबाइल नंबर 7006058623 भी दिया गया है।

'आतंकियों को बख्शा नहीं जाएगा'

नापाक एजेंडा नहीं होगा कामयाब- पीएम मोदी

दक्षिण कश्मीर के प्रमुख पर्यटक स्थल पहलगाम में आतंकियों ने पर्यटकों पर हमला कर दिया, जिसमें 28लोगों की मौत हो गई. इसके हमले के बाद सुरक्षा एजेंसियां अलर्ट पर है. इस बीच प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि हमला करने वालों को बख्शा नहीं जाएगा. उन्होंने कहा, "मैं जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले की कड़ी निंदा करता हूं. जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, उनके प्रति मेरी संवेदना है. मैं प्रार्थना करता हूं कि घायल लोग जल्द से जल्द ठीक हो जाएं." पीएम मोदी ने कहा, प्रभावित लोगों को हर संभव सहायता प्रदान की जा रही है. इस जघन्य कृत्य के पीछे जो लोग हैं, उन्हें न्याय के कटघरे में लाया जाएगा...उन्हें बख्शा नहीं जाएगा. उनका नापाक एजेंडा कभी सफल नहीं होगा. आतंकवाद से लड़ने का हमारा संकल्प अडिग है और यह और भी मजबूत होगा।

मिनी स्विटजरलैंड बना निशाना

अधिकारियों ने बताया कि टूरिस्टों पर यह आतंकी हमला लंबे हरे-भरे घास के मैदानों वाली बैसरन घाटी में दोपहर बाद तीन बजे हुआ। इसे ह्यमिनी स्विट्जरलैंडह्न भी कहा जाता है। चश्मदीदों ने बताया कि हथियारबंद आतंकी बैसरन घाटी के पहाड़ से नीचे उतरे और वहां घुड़सवारी करते टूरिस्टों, खाने-पीने की जगहों और पिकनिक मनाते लोगों पर अंधाधुंध फायरिंग की।

मैं तुरंत श्रीनगर जा रहा हूं.. - उमर अब्दुल्ला

जम्मू कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला ने एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि मैं अविश्वसनीय रूप से स्तब्ध हूँ। हमारे आगंतुकों पर यह हमला एक घृणित कार्य है। इस हमले के अपराधी जानवर, अमानवीय और घृणा के पात्र हैं। निंदा के लिए कोई भी शब्द पर्याप्त नहीं है। मैं मृतकों के परिवारों के प्रति अपनी संवेदनाएँ व्यक्त करता हूँ। मैंने अपनी सहकर्मी से बात की है और वह घायलों के लिए व्यवस्थाओं की देखरेख करने के लिए अस्पताल चली गई हैं। मैं तुरंत श्रीनगर वापस जा रहा हूँ।

'सऊदी में या हबीबी कहकर मिलेंगे और यहां...'

नई दिल्ली

एआईएमआईएम अध्यक्ष और लोकसभा सांसद असदुद्दीन ओवैसी ने वक्फ संशोधन अधिनियम की तीखी आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि यह वक्फ संपत्तियों की सुरक्षा करने के बजाय भूमि हड़पने में मदद करता है। उन्होंने कहा कि इस अधिनियम का पूरे भारत में मुस्लिम संगठनों द्वारा व्यापक रूप से विरोध किया गया है, जबकि सरकार समुदाय से व्यापक समर्थन के दावों के विपरीत है। ओवैसी ने सरकार पर एक प्रचार पुस्तिका के माध्यम से जनता को गुमराह करने का आरोप लगाया।

5 दिन में हटाएं वीडियो, शरबत जिहाद को लेकर दिल्ली हाईकोर्ट ने रामदेव को लगाई फटकार

नई दिल्ली

दिल्ली हाई कोर्ट ने बाबा रामदेव की टिप्पणियों के खिलाफ रूह अफजा बनाने वाली कंपनी हमदर्द की याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि अस्वीकार्य टिप्पणियाँ अदालत की अंतरात्मा को झकझोरती हैं।

योग गुरु बाबा रामदेव ने मंगलवार को लोकप्रिय पेय रूह अफजा के बारे में टिप्पणियों वाले वीडियो और सोशल मीडिया पोस्ट को हटाने पर सहमति जताई, जिस पर दिल्ली हाई कोर्ट की नाराजगी थी।

रामदेव के वकील ने अदालत को बताया कि विवादित वीडियो, जिसमें 'शरबत जिहाद' जैसे विवादास्पद शब्द थे, उसे तुरंत हटा दिया जाएगा। यह आश्वासन दिल्ली उच्च न्यायालय द्वारा रूह अफजा को लक्षित करने वाली रामदेव की टिप्पणियों पर कड़ी नाराजगी व्यक्त करने के तुरंत बाद दिया गया। दिल्ली हाई कोर्ट ने बाबा रामदेव की टिप्पणियों के खिलाफ रूह अफजा बनाने वाली कंपनी हमदर्द की याचिका पर सुनवाई करते हुए कहा कि अस्वीकार्य टिप्पणियाँ अदालत की अंतरात्मा को झकझोरती हैं।

अदालत ने रामदेव की टिप्पणियों को गंभीरता से लिया। न्यायाधीश ने कहा जब मैंने वीडियो देखा तो मुझे अपने कानों और आंखों पर विश्वास नहीं हुआ।

हिंदी वाले फैसले पर लगी रोक, राज ठाकरे बोले, 'मैं एक बार फिर...'

बैकफुट पर महाराष्ट्र सरकार !

महाराष्ट्र

महाराष्ट्र के स्कूलों में कक्षा एक से पांच तक के बच्चों को हिंदी भाषा अनिवार्य करने वाले फैसले पर रोक लगा दी गई है. स्कूल एजुकेशन मिनिस्टर दादा भूसे ने प्रेस कॉन्फ्रेंस कर इसकी जानकारी दी. इसको लेकर महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना प्रमुख राज ठाकरे ने आक्रामक रुख अपनाया था. सरकार के इस फैसले पर राज ठाकरे की प्रतिक्रिया भी सामने आई है.

महाराष्ट्र में सिर्फ मराठी चलेगी- राज ठाकरे

राज ठाकरे ने कहा, "सरकार ने निर्णय लेने से पहले विचार किया होता तो आज निर्णय वापस लेने की स्थिती नहीं आती. लेकिन समय रहते सरकार ने निर्णय वापस लिया इसलिए सरकार का धन्यवाद. मैं एक बार फिर कहना चाहता हूं महाराष्ट्र में दूसरी या तीसरी कोई भाषा नहीं चलेगी. महाराष्ट्र में सिर्फ मराठी ही चलेगी."

राज ठाकरे ने अपना लिया था आक्रामक रुख

दरअसल, हाल ही में महाराष्ट्र सरकार ने क्लास 1 से क्लास 5 तक के बच्चों के लिए हिंदी को तीसरी भाषा के तौर पर अनिवार्य कर दिया था.

सरकार के इस फैसले के बाद ही राज ठाकरे भड़क गए गए थे और उन्होंने मोर्चा खोल दिया था. उन्होंने साफ तौर पर कह दिया था कि हम महाराष्ट्र में ये होने नहीं देंगे।

यूपीएससी के नतीजे घोषित

प्रयागराज की शक्ति दुबे बनीं टॉपर, दूसरे नंबर पर हर्षिता गोयल

प्रयागराज

जिन अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी थी, वे अपना परिणाम यूपीएससी की आधिकारिक वेबसाइट पर देख सकते हैं। शक्ति दुबे ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बायोकेमिस्ट्री में स्नातक (विज्ञान स्नातक) किया है। संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) ने सिविल सेवा परीक्षा (सीएसई) 2024 के अंतिम परिणाम घोषित कर दिए हैं। शक्ति दुबे यूपीएससी सीएसई 2024 के टॉपर बने हैं, दूसरे स्थान पर हर्षिता गोयल और तीसरे स्थान पर डोंगरे अर्चित पराग हैं। भारतीय

प्रशासनिक सेवा (आईएएस), भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस), भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) और अन्य केंद्रीय सेवाओं (समूह 'ए' और 'बी') सहित प्रतिष्ठित सेवाओं के लिए कुल 1,009 उम्मीदवारों की सिफारिश की गई है।

जिन अभ्यर्थियों ने परीक्षा दी थी, वे अपना परिणाम यूपीएससी की आधिकारिक वेबसाइट पर देख सकते हैं।

शक्ति दुबे ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से बायोकेमिस्ट्री में स्नातक (विज्ञान स्नातक) किया है। आयोग द्वारा जारी एक बयान में कहा गया है कि उन्होंने राजनीति विज्ञान और अंतरराष्ट्रीय संबंध को वैकल्पिक विषय के रूप में लेकर परीक्षा उत्तीर्ण की।

एमएस यूनिवर्सिटी ऑफ बड़ौदा से बी.कॉम की डिग्री प्राप्त हर्षिता गोयल ने राजनीति विज्ञान और अंतरराष्ट्रीय संबंध को वैकल्पिक विषय के रूप में रखते हुए दूसरा स्थान प्राप्त किया। डोंगरे अर्चित पराग, जिन्होंने वीआईटी, वेल्लोर से इलेक्ट्रिकल और इलेक्ट्रॉनिक्स इंजीनियरिंग में बैचलर ऑफ टेक्नोलॉजी (बी.टेक) की डिग्री प्राप्त की है, दर्शनशास्त्र को वैकल्पिक विषय के रूप में रखते हुए तीसरे स्थान पर रहे। गुजरात टेक्नोलॉजिकल यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद से कंप्यूटर इंजीनियरिंग में बैचलर ऑफ इंजीनियरिंग की डिग्री प्राप्त शाह मार्गी चिराग ने समाजशास्त्र को वैकल्पिक विषय के रूप में लेकर चौथा स्थान हासिल किया है।

'न संसद, न कार्यपालिका, संविधान सर्वोच्च है', - कपिल सिब्बल

नई दिल्ली

सिब्बल ने यह भी दावा किया कि अदालत ने जो कुछ भी कहा वह देश के संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप था और राष्ट्रीय हित से प्रेरित था। सिब्बल की टिप्पणी एक्स पर पोस्ट के तुरंत बाद आई जब धनखड़ ने कहा कि संवैधानिक प्राधिकरण द्वारा बोला गया हर शब्द सर्वोच्च राष्ट्रीय हित से निर्देशित होता है।

राज्यसभा सांसद कपिल सिब्बल ने एक बार फिर से उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ के बयान पर पलटवार किया है। उन्होंने कहा कि न तो संसद और न ही कार्यपालिका बल्कि संविधान सर्वोच्च है।

सिब्बल ने यह भी दावा किया कि अदालत ने जो कुछ भी कहा वह देश के संवैधानिक मूल्यों के अनुरूप था और राष्ट्रीय हित से प्रेरित था। सिब्बल की टिप्पणी एक्स पर पोस्ट के तुरंत बाद आई जब धनखड़ ने कहा कि संवैधानिक प्राधिकरण द्वारा बोला गया हर शब्द सर्वोच्च राष्ट्रीय हित से निर्देशित होता है।

करछना में विद्युत विभाग बना लापरवाह, चार दिनों से हजारों घरों की विद्युत सप्लाई हुई गुल

- अपने अधिकारियों का भी नहीं मानते आदेश विद्युतकर्मी
- उमस भरी गर्मी में बिना जल के जनता है परेशान

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिले के करछना 33/11 विद्युत उपकेंद्र करछना के बड़ी संख्या में उपभोक्ताओं को चार दिन से अंधेरे में रहने के लिए मजबूर होना पड़ रहा है। विभाग के अधिकारी से लेकर कर्मचारी एसी और कूलर से निकलकर बाहर काम करने में कतरा रहे हैं। विद्युत उपकेंद्र करछना के अंतर्गत साधु कुटी चौराहे पर लगे 100 केवीए का ट्रांसफार्मर चार दिनों से जल जाने के कारण बड़ी संख्या में उपभोक्ताओं को गर्मी में पानी की समस्या उत्पन्न हो गई है। उपभोक्ताओं ने विभाग से कई बार शिकायत भी की। वहीं स्थानीय जेई को लोगों फोन भी मिलाया लेकिन जेई फोन उठाना तक उचित नहीं समझे। जिससे स्थानीय लोगों की समस्या उमस भरी गर्मी में बिना जल के बनी हुई। जिससे लोग बूंद बूंद जल के लिए तरस रहे हैं। वहीं बसरिया गांव में 200 केवीए ट्रांसफार्मर की केवल जल जाने से दस घंटे बाद भी विद्युत की सप्लाई बहाल नहीं की गई है। इस संबंध में अवर अभियंता और एसडीओ तक को उपभोक्ताओं ने शिकायत दर्ज कराई लेकिन समस्या जस की तस बनी हुई है।

उपभोक्ताओं का मानना है कि जिम्मेदार अधिकारी अपने कार्यालय में जमें रहते हैं जिस कारण उपभोक्ताओं को दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। वहीं अधिकारियों के आदेश का पालन उनके ही विभाग के लाइनमैन नहीं करते हैं।

एसडीओ को मालूम चला कि तीन चार दिनों से लाइट कई गांव में नहीं है तो उसके बाद एसडीओ ने लाइनमैन को फोन करके सुधारने के लिए आदेश दिया। अब सवाल उठता है कि अधिकारियों के आदेश का पालन लाइनमैंन कितना शीघ्र करेंगे इस बात की पुष्टि स्थानीय जनता ही बताएगी।

रंजीत हत्याकांड में पुलिस ने साजिशकर्ता को गिरफ्तार कर चालान किया

अखंड भारत संदेश

पुलिस गिरफ्त में साजिशकर्ता

उतरांव। उतराव पुलिस ने रंजीत कुशवाहा हत्याकांड का में फरार चल रहे अभियुक्त साजिशकर्ता को गिरफ्तार कर न्यायालय के लिए चालान कर दिया। ज्ञात हो कि 19 मार्च 2024 में मोतिहा गांव निवासी रंजीत कुशवाहा पुत्र स्वर्गीय हरिलाल की गोली मारकर हत्या कर दी गई थी। तथा शव को घर से 200 मीटर दूरी पर सुनसान जगह पर ठिकाने लगा दिया था। वहीं मृतक के भाई की तहरीर पर पुलिस ने जांच पड़ताल के बाद टेक्निकल साक्ष्यों के अनुसार पुलिस ने बरेठी डगरहा का पुरा निवासी शिव दर्शन सिंह को पकड़कर कड़ाई से पूछताछ में कबूल किया। लेकिन बयान में कहानी एक अलग नया मोड़ ले ली। सुदर्शन सिंह के बयान में बधवा ताहीरपुर झूसी निवासी मुन्नालाल पासी पुत्र पुरुषोत्तम का नाम लिया। बताया कि जमीन व पैसे के लेनदेन में विवाद के मामले में मुन्नालाल पासी ने सुपारी देकर हत्या करवाई। पुलिस ने घटना के समय गिरफ्तार अभियुक्त शिव दर्शन को जेल भेज दिया था। पुलिस ने उक्त मामले में एन बी डब्ल्यू की कार्रवाई की थी। अभियुक्त मुन्नालाल पासी जो वर्षों से फरार चल रहा था पुलिस को तलाश थी। सटीक मुखबिर की सूचना पर उतराव थाना अध्यक्ष पंकज कुमार त्रिपाठी साजिश कर्ता मुन्नालाल पासी को एकडला से 200 मीटर आगे निर्माण धीन बाउंड्री वॉल भरहरी के पास से घेराबंदी कर गिरफ्तार किया। पुलिस के पूछताछ में गिरफ्तार अभियुक्त ने जुर्म को स्वीकार किया तथा जमीन व पैसे को लेकर हत्या करने की बात काबूली। पुलिस ने गिरफ्तार अभियुक्त को न्यायालय के लिए चालान कर दिया।

प्रधान और ग्राम पंचायत सदस्यों के उपचुनाव की नामांकन प्रक्रिया सम्पन्न

प्रयागराज। ग्राम पंचायत चुनाव की तैयारी शुरू हो गई है। मंगलवार को कौंधियारा ब्लाक में बड़गोहना कला, एकौनी, बकरावा गांव में उप चुनाव की नामांकन प्रक्रिया सुबह 10 बजे से शुरू हो गई। एकौनी में महिला सीट के लिए पांच पर्चा, बड़गोहना कला में छः व बकरावा में तीन का नामांकन हुआ। आगामी दो मई को मतदान और पांच मई को मतगणना होगी। एआरओ अशोक कुमार सिंह ने बताया की बड़गोहना कला में राजधर, उग्रसेन, अनारकली, राज किशोर, शिव दर्शन बिन्द, अशोक कुमार, बकरांवा गांव में शिव जीत, शिव शंकर, सावित्री देवी, एकौनी गांव मे हेमा, रानी देवी, अंगूरा देवी, माया देवी, चम्पा देवी के नामांकन प्रक्रिया शाम चार बजे तक पूरी हुई। प्रक्रिया सब इस्पेक्टर शकील खान सिद्दीकी की उपस्थिति में शांति पूर्वक सम्पन्न हुई।

करछना थाना क्षेत्र में क्राइम ग्राफ में बढ़ोतरी से पुलिस प्रशासन पर लग रहा है प्रश्न चिन्ह

अखंड भारत संदेश

करछना। जमुनापार क्षेत्र थाना करछना में एक सप्ताह के भीतर दो युवकों की घर से बुलाकर हत्या कर दिए जाने से क्षेत्र में आम जनमानस में पुलिस प्रशासन पर प्रश्न चिन्ह लगा हुआ है, हालांकि दोनों हत्याकांड में आरोपी को पुलिस तत्परता दिखाते हुए गिरफ्तार कर जेल भेज दिया है, लेकिन लगातार हो रही हत्याओं से लोगों का पुलिस प्रशासन पर से विश्वास उठता जा रहा है

बीती रात करछना थाना क्षेत्र के देवरी कला गांव निवासी एक युवक को घर से बुलाकर उसके साथ करने वाले दोस्त ने हत्या कर शव फेंक कर फरार हो गए

प्रयागराज जनपद करछना थाना अंतर्गत क्षेत्र के देवरी कला निवासी एक युवक को घर से बुलाकर ले जाकर शराब पिलाया और हत्या करने का आरोप लगा सूचना पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर लिखा पढ़ी कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है सहायक पुलिस कमिश्नर करछना वरुण कुमार ने बताया कि क्षेत्र में देवरी कला गांव निवासी मानव सिंह ने मंगलवार को सुबह सूचना दी कि उसका छोटा भाई मनोज सिंह 42 वर्ष थाना क्षेत्र के अंतहिया गांव निवासी प्रदीप मिश्रा उर्फ कल्लू मिश्रा ने सोमवार को बुलाकर घर से ले गया था और आरोप है कि शराब पीकर हत्या कर दी मंगलवार सुबह मृतक के भाई घनश्याम सिंह ने पुलिस को सूचना दी पुलिस ने शव कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया और पीड़ित के तरफ से दी गई तहरीर पर मुकदमा पंजीकृत कर आरोपी को गिरफतार कर लिया गया है, वहीं दूसरी घटना एक सप्ताह पूर्व इसी थाना क्षेत्र के ईसौटा लोहनपुर में दलित युवक को घर से बुलाकर उसके परिचित गांव के ले गए और रात को शराब पीने के बाद दलित युवक की हत्या कर जला दिया गया था जिसमें इस दलित युवक की ज़िंदा जलाए जाने की बात को लेकर उत्तर प्रदेश सरकार की छीछालेदर हुई जिसमें कयी विपक्षी पार्टी के लोगों ने दलित के घर जाकर सांत्वना देने पहुंचे और सरकार की नाकामी पर प्रश्न चिन्ह लगाया गया था, लगातार हुई दो हत्याकांड मामले में पुलिस प्रशासन पर प्रश्न चिन्ह लग है, हालांकि पुलिस ने समय रहते सभी आरोपियों को पकड़ कर जेल में डाल दिया है।

भीषण गर्मी में विद्युत व्यवस्था हुई धड़ाम, क्षेत्र की जनता में आक्रोश

प्रयागराज। क्षेत्र अंतर्गत विद्युत उपकेंद्र पीड़ी फीडर के सेहरा गांव की विद्युत व्यवस्था धड़ाम हो गई है। वहीं आये दिन विद्युत कटौती से क्षेत्र की जनता पानी की किल्लत से जूझ रहा है। ग्रामीण दीपक कुमार व धर्मेंद्र ने बताया की गाँव में जर्जर विद्युत व्यवस्था को दुरुस्त करने के लिये क्षेत्र की जनता को बिना सूचना दिये सुबह से शाम तक विद्युत आपूर्ति बाधित कर दी जाती है। जिससे ग्रामीण क्षेत्र की जनता भीषण गर्मी में परेशान हो जाते है। वहीं पानी की किल्लत भी बढ़ जाती है। विद्युत सप्लाई बाधित होने को लेकर ग्रामीण लाइन मैन को फोन करते है तो गलत सूचना देकर फोन काट दिया जाता है। जिससे ग्रामीण इलाके की जनता में आक्रोश व्याप्त है। ग्रामीणों ने विद्युत विभाग के उच्चाधिकारी से क्षेत्र की विद्युत व्यवस्था सुचारू रूप से चलाने की मांग की है।

केंद्र और प्रदेश की डबल इंजन सरकार मनरेगा मजदूरों का बिल पास कराएं : रामकृपाल कोल

- मनरेगा श्रमिकों की मजदूरी बढ़ाए जाने की उठी मांग

कोरांव। कांग्रेस लीडर पूर्व विधायक रामकृपाल कोल ने कहा डबल इंजन की सरकार जिन श्रमिकों के बल बूते चल रही है उन्हें कई माह से पारिश्रमिक नहीं मिल सका अफसोस की बात है।

पूर्व विधायक ने कहा कि सरकार ने बड़े लंबे बजट लुभावने दिखावे में वाह वाही तो लूटी किंतु उन गरीब मजदूरों की मजदूरी आज भी मात्र 233 रुपए प्रतिदिन है। जब कि लोग चार से पांच सौ रुपए प्रतिदिन पाते हैं। मजदूरों और ग्राम प्रधानों का रोना है कि पांच छ मैश से मजदूरी करके मजदूर अपने मजदूरी की इंतजारी में है,होली जैसे कई प्रमुख त्योहार व्यतीत हो गए शादी विवाह उनके घरों में संपन्न हुए हुए किंतु संसद में बजट पास होने के बावजूद मजदूरी नहीं ब्लॉकों में भेजी गई। जिससे ग्राम पंचायतों में विकास कार्य बंद हैं बिना मजदूरी,बिना सामग्रियों के भुगतान के कोई विकास का पहिया नहीं चल पा रहा है। श्रमिकों का गांवों से पलायन हो चुका है। श्री कोल ने कहा कि प्रांत और केंद्र तथा राज्य सभा विधान परिषद में पहुंचे नेता अपने श्रमिकों के लिए उनकी समस्याओं के लिए सरकारों से प्रश्न नहीं पूंछ सकते। समस्याएं हल नहीं करा सकते धिक्कार है। उन्होंने कहा कि चुने गए जन प्रतिनिधि सदन में वक्फ बिल अमेनमेंट पर तो सहमत जताए किंतु देश की रीढ़ कहा जाने वाला गरीब श्रमिक के मजदूरी बकाए के बिल भुगतान पर आवाज नहीं बुलंद कर सके। मनरेगा कानून में प्रदत्त नियमावलियां के अनुसार समय से पारिश्रमिक न दिए जाने पर विधिक कार्यवाही का भी प्राविधान है। किंतु सरकार की सेहत पर कोई असर नहीं दिखता। गरीब मजदूर उनकी निगाह में कुछ नहीं है। मनरेगा से होने वाला विकास कार्य भी पूरी तरह बिना मजदूरी के और बिना मजदूरी रेट बढ़ाए असंभव है।

तार टूटने से तीन बीघे गेहूं की फसल चढ़ी आग की भेंट

- किसानों ने एकजुट होकर एक घंटे की कड़ी मश्क्कत के बाद आग पर पाया काबू

अखंड भारत संदेश

कौंधियारा के कुकुढ़ी गाँव में अगलगी के बाद जुटे ग्रामीण

कौंधियारा। क्षेत्र के कुकुढ़ी गांव में मंगलवार की दोपहर ग्यारह हजार सप्लाई वाले बिजली के तार टूटकर गिरने से गेहूं की फसल में आग लग गई। जिसमें तीन बीघा गेहूं की फसल जलकर राख हो गई। खेतों में कटाई कर रहे मजदूर भी बाल-बाल बच गए। किसानों ने एकजुट होकर एक घंटे की कड़ी मश्क्कत के बाद आग पर काबू पाया। हालांकि सूचना के बाद भी दमकल टीम समय से नहीं पहुंच सकी।

मंगलवार को क्षेत्र के कुकुढ़ी गाँव निवासी प्रदीप यादव पुत्र स्व राजकुमार यादव व नंदकिशोर यादव पुत्र स्व राजकुमार यादव के खेत में मंगलवार दोपहर लगभग 3 बजे ग्यारह हजार बोल्ट का जर्जर तार टूट कर गिरने से खेत में खड़े गेहूँ की फसल में आग लग गई। आग ने देखते-देखते विकराल रूप धारण कर लिया। आग भड़कते ही आसपास कटाई कर रहे किसानों ने एकत्र होकर कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया, तब तक तीन बीघे की फसल जल गई। ग्रामीणों ने पुलिस और अग्निशमन को इसकी सूचना दी। सूचना पर काफी देर बाद पहुंचे अग्निशमन कर्मियों ने आग पर काबू पाया। वहीं पुलिस और राजस्व कर्मियों ने मौका मुआयना कर कार्यवाही की।

राहगीरों को ठंडा जल पिलाने के लिए प्याऊ का हुआ उद्घाटन

करछना। प्रयागराज जिले की यमुनापार क्षेत्र के रामपुर में जीवनदीप हॉस्पिटल के प्रबंधक डॉक्टर गुलाम मुस्तफा उर्फ लाल मियां के सौजन्य से आज मंगलवार को हॉस्पिटल के बाहर निशुल्क ठंडा प्याऊ जल का व्यवस्था किया गया। संगम समाज सेवा समिति द्वारा 20 वर्षों से सेवा में तात्पर शिक्षा स्वास्थ्य देश की एकता अखंडता एवं समाज की भलाई के लिए समर्पित संस्था हैं। डॉक्टर गुलाम मुस्तफा का ने कहा कि समाज का सेवा करना हमारा सबसे पहला प्राथमिकता है और इसी तरीके से हम समाज में सेवा करते रहेंगे। एडवोकेट शहजादुउल हक ने कहां कि ठंडा जल प्याऊ की कहीं भी जरुर पड़ेगी तो हमारी संगम समिति संस्था द्वारा व्यवस्था किया जाएगा। इस मौके पर, डाक्टर अर्जून सिंह, एडवोकेट शहजादुउल हक, मोहम्मद अमन, डाक्टर अफजल, डाक्टर बेबी राम बाबू गौतम आदि क्षेत्र के लोग मौजूद रहे।

मऊआइमा में हुई कांग्रेस पार्टी की बैठक में भाजपा को कोसा गया

अखंड भारत संदेश

मऊआइमा। कांग्रेस पार्टी के गंगापार जिला अध्यक्ष अशफाक अहमद के नेतृत्व में संगठन सृजन अभियान के तहत मऊआइमा ब्लॉक के ग्राम अल्लीपुर में कांग्रेस पार्टी के निवर्तमान पदाधिकारी एवं कांग्रेस कार्यकताओं की बैठक संपन्न हुई।जिसमें पार्टी कार्यकताओं को संबोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस पार्टी का सिद्धांत है कि सभी जाति बिरादरी धर्म सम्प्रदाय को एक साथ लेकर चलना और सभी को न्याय और सम्मान दिलाना। बैठक में आरोप लगाया गया कि देश में चारों ओर अराजकता का माहौल है। महंगाई, बेरोजगारी,से जनता बेहाल,परेशान है।गरीब की थाली? से दाल गायब है। बढ़ी हुई डीजल पेट्रोल की कीमतों के कारण किसान बेहाल है।भाजपा सरकार हिंदू मुस्लिम मंदिर मस्जिद धर्म सम्प्रदाय के झगड़े में जनता को उलझा कर जनता का शोषण कर रही है।। बैठक में में कलीम अल्ताफ, अनिल कुमार सरोज, फिरोज अहमद, सुरेंद्र यादव, मो.जमील राम पूजन यादव, विनोद कुमार गौतम, मो. फारूक, हरिकेश यादव, मो. शकील, शंकर पटेल, रफीक अहमद, शिवप्रसाद प्रजापति, शमशाद अहमद, राम मणि ओझा, अंतिमा सरोज, मो.शफीक, मालती सरोज, निर्मला सरोज, मो.आलम, ननकी देवी, मो.खालिक, मो.परवेज, राकेश कुमार सोनी, छेदीलाल पटेल आदि लोग मौजूद थे।

प्रहलाद चरित्र, नरसिंह अवतार सुनकर भाव-विभोर हुए जंघई निवासी

जंघई। मुख्य यजमान शारदा प्रसाद पाठक एवं उर्मिला पाठक के निवास तुलापुर ककरहां, जंघई में कथावाचक पंडित अशोकानंद महाराज के मुखारविंद से चल रही संगीतमय श्रीमद्भागवत कथा के तीसरे दिन मंगलवार को महाराज ने कथा में प्रहलाद चरित्र, नरसिंह अवतार की कथा सुनाई। महाराज ने भरत के तीन जन्म की कथा सुनाई जिसमें भक्त अजामिल पर की गई कृपा, वृत्रासु, प्रसंग, नरसिंह भगवान अवतार, भक्त प्रहलाद की कथा और हिरण्यकश्यप वध की कथाओं के प्रसंग सुनाए। उन्होंने भक्त ध्रुव और प्रहलाद की कथा के वृतांत सुनाते हुए कहा कि भक्त पर संकट आने पर भगवान भक्त की रक्षा करने के लिए दौड़े चले आते हैं भक्त के प्रति भगवान का स्नेह अपार होता है, और भक्त पर ईश्वर की कृपा सदैव बनी रहती है। जब भक्त प्रहलाद पर पिता हिरण्यकश्यप द्वारा प्रताड़ित किया गया तो आखिर में भक्त की रक्षा के लिए भगवान ने खंभे से नरसिंह भगवान का अवतार लिया और धरती पर हिरण्यकश्यप के बढ़ते पाप, अत्याचार को मिटाने के लिए हिरण्यकश्यप का वध किया। कथा के बीच बीच भजनों की प्रस्तुति पर श्रद्धालु मंत्रमुग्ध हो गए और भावविभोर होकर नाचने लगे कथा में बड़ी संख्या में महिला-पुरूष कथा श्रवण करने पहुंचे थे।इस अवसर पर पवन पाठक, रमेश पाठक, दिनेश पाठक, राजेश पाठक, सचिन पाठक, शैलेश पाठक, रोहित ब्राह्मण, विजय मिश्रा, सुरेश विश्नोई, पंकज त्रिपाठी, शंकर दुबे, त्रिवेणी प्रसाद, पांडेय, यमुना प्रसाद पांडेय, सुनील दुबे, किशन मिश्रा, अमित पाठक, अतिश पाठक सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

उच्च प्राथमिक विद्यालय सुजौना के बच्चों ने मनाया पृथ्वी दिवस

पृथ्वी दिवस पर सम्मानित किये गये बच्चे

जसरा। उच्च प्राथमिक विद्यालय सुजौना जसरा प्रयागराज के बच्चों ने विश्व पृथ्वी दिवस को विद्यालय में मनाया। बच्चों ने जल संरक्षण, केमिकल के इस्तेमाल में कमी, कचरा प्रबंधन, वायु प्रदूषण में कमी करें, वृक्षारोपण से संबंधित चित्र चार्ट बनाकर बची रहे हमारी पृथ्वी का संदेश दिया। बच्चों ने निबंध प्रतियोगिता में भी प्रतिभाग करके अपने विचारों को अभिव्यक्त किया। विद्यालय की इको क्लब टीम ने विद्यालय की बागवानी को संवारा। मुख्य अतिथि के रूप में ईश्वरदीन छेदीलाल इंटर कालेज जसरा के प्रधानाचार्य डॉ योगेन्द्र सिंह उपस्थित रहे। उन्होंने कहा कि पर्यावरण का संरक्षण प्रत्येक व्यक्ति का उत्तरदायित्व है। इसमें सबकी महत्वपूर्ण भूमिका हैं। उन्होंने कहा जलवायु परिवर्तन की विसंगतियां आज खतरनाक स्तर पर पहुंच गई है। धीरे धीरे पीने योग्य जल समाप्त हो रहा सबको जलसंरक्षण के प्रति जागरूक होकर जल को बचाना होगा। विद्यालय के प्रधानाध्यापक श्यामाकांत द्विवेदी ने कहा सभी लोग अपने आसपास वृक्षारोपण कर उसका संरक्षण करें।उन्होंने कहा धरती के हित में हर तरह के प्रदूषण पर नियंत्रण अति आवश्यक है। पृथ्वी दिवस पर आयोजित निबंध प्रतियोगिता में रागिनी यादव प्रथम, सोनाक्षी यादव द्वितीय व अर्पित ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इसी तरह चित्र चार्ट प्रतियोगिता में सम्मिलित बच्चों को मुख्य अतिथि व प्रधानाध्यापक ने मेडल व प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। इस अवसर पर विद्यालय के भारतेन्द्र त्रिपाठी, नाज़िया सुल्ताना, रजनीकांत पांडेय, जितेन्द्र कुमार शर्मा, शिशिर जायसवाल, अरविंद कुमार सिंह, अमरदीप चौधरी, राकेश कुमार, पूनम तिवारी उपस्थित रहे।

नामांकन को लेकर छात्रों ने निकाली जागरूकता रैली

प्रयागराज। मंगलवार को क्षेत्र के जवाहर लाल नेहरू स्मारक इण्टर कॉलेज जारी के छात्रों ने प्रवेशोत्सव रैली निकाली। छात्र हाथों में बढे बेटियां पढे बेटियां एवं मेरा विद्यालय मेरा अधिकार का आकर्षक स्लोगन लिए हुए थे। सरकार की ओर से विद्यालयों में शत-प्रतिशत नामांकन सुनिश्चित करने के उद्देश्य से नामांकन पखवारा चलाया जा रहा है। सर्व सर्व शिक्षा अभियान के तहत मंगलवार को जिलाधिकारी के निर्देश पर विशेष नामांकन अभियान के तहत जवाहर लाल नेहरू स्मारक इंटर कालेज के छात्रों द्वारा रैली निकाली गयी। रैली के दौरान से विद्यालय के छात्र छात्राओं सहित शिक्षकों ने भी बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया।

अनियंत्रित वाहन ने सो रहे परिवार को कुचला, बाप-बेटी की मौत

- सोमवार देर रात हुए हादसे में पत्नी समेत दो घायल
- पुलिस के मुताबिक आरोपी वाहन की पहचान कर ली गई है। जल्द ही उसे कब्जे में लेकर आरोपी चालक को गिरफ्तार कर लिया जायेगा

अखंड भारत संदेश

सूचना के बाद घटनास्थल पर पहुंची पुलिस

नैनी। नैनी औद्योगिक थाना क्षेत्र अंतर्गत रामपुर, पिपरांव गांव में सोमवार देर रात एक अनियंत्रित वाहन ने बगीचे में सो रहे परिवार को कुचल दिया। इससे पिता और उसकी मासूम बेटी की मौत हो गई, जबकि पत्नी समेत दो लोग घायल हो गए। उन्हें इलाज के लिए अस्पताल ले जाया गया है। पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जानकारी के मुताबिक सोमवार रात पिपरांव मार्ग सब्जी मंडी के बगीचे में सपेरा समाज का बिरजू 25 सो रहा था। उसके पास उसकी पत्नी सपना, रिश्ते के ससुर को पीसरनाथ तथा छह साल की मासूम बेटी बिपासना भी सो रहे थे। उसी दौरान देर रात एक अनियंत्रित वाहन ने उनको कुचल दिया। इससे बिरजू और उसकी बेटी की मौत हो गई, जबकि पत्नी और ससुर घायल हो गए। सूचना पाकर पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को अस्पताल भिजवाया। मौका मुआयना के बाद पुलिस ने शवों को पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। पुलिस के मुताबिक आरोपी वाहन की पहचान कर ली गई है। जल्द ही उसे कब्जे में लेकर आरोपी चालक को गिरफ्तार कर लिया जायेगा। मृतक परिवार शंकरगढ़ के खानाबदोश बताये जा रहे हैं।

प्रमसपा आरक्षण रथ यात्रा का सहसों में हुआ भव्य स्वागत

अखंड भारत संदेश

सहसों। प्रगतिशील मानव समाज पार्टी के तत्वावधान में आयोजित अति पिछड़ा प्रदेश व्यापी आरक्षण रथ यात्रा भ्रमण के दौरान मंगलवार को प्रयागराज के भीटी, औरा, बरौत, हंडिया, सैदाबाद, हाबूसा मोड़ होते हुए सहसों पहुंचने पर पार्टी कार्यकताओं द्वारा यात्रा एवं यात्रा का नेतृत्व कर रहे पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रेमचंद बिंद का भव्य स्वागत हुआ। कार्यकताओं का अभिवादन स्वीकार करते हुए राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि इस रथ यात्रा के द्वारा अति पिछड़ा आरक्षण के बारे में लोगों को जागरूक करते इसमें शामिल सभी जातियों को जब तक उनका आरक्षण नहीं मिल जाता एवं सामाजिक आर्थिक शैक्षणिक राजनीतिक स्थिति सुधारने के लिए एवं शिक्षा और रोजगार के क्षेत्र में जब तक अति पिछड़ी जातियों को अलग से आरक्षण का कोटा नहीं मिल जाता तब तक यह यात्रा चलती रहेगी। यात्रा प्रदेश में पांच चरणों में आयोजित है उन्होंने बताया कि प्रथम चरण की यात्रा में यह यात्रा कल प्रतापगढ़ में समाप्त होगा। इसके पश्चात यात्रा फूलपुर की तरफ रवाना हो गया। इस मौके पर श्याम पति बिंद, मौजी लाल बिंद, मदन चंद्रबिंद, महेंद्र कुमार बिंद, प्रेम बहादुर सिंह, राकेश कुमार जायसवाल, राजेश कुमार महान, मोहनलाल बिंद, जगदीश कुमार बिंद, बीपी परवाना, गुलाब बिंद, रामजी बिंद मास्टर साहब, गिरधारी लाल सरोज, जेपी बिंद, कन्हैयालाल, राम जी, कन्हैया लाल कनौजिया, रामधनी, राम अचल सहित भारी संख्या में आदि कार्यकर्ता मौजूद रहे।

सड़क दुर्घटना में घायल शुभम तड़पता रहा लेकिन सीएचसी रामनगर के डाक्टरों ने नहीं किया इलाज

- घंटों स्ट्रेचर पर इंतजार करने के बाद परिजनों ने बुलाई प्राइवेट एम्बुलेंस गाड़ी और प्राइवेट अस्पताल में कराया भरती
- आक्रोशित लोगों ने सीएमओ प्रयागराज से स्वतः संज्ञान लेने और गैर जिम्मेदार डाक्टरों पर पर एक्शन लेने की किया है मांग

मेजा। सड़क दुर्घटना में घायल शख्स का सीएचसी रामनगर में तैनात गैरजिम्मेदार चिकित्सकों द्वारा इलाज न करने से स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश कायम है। लोगों ने प्रयागराज के सीएमओ को प्रकरण स्वयं संज्ञान में लेने और कार्यवाही किए जाने की मांग किया है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार सिरसा बाजार निवासी सुभम सोनी की बीती रात डोरवा मोड़ के गोसौराकला स्थित दुर्गावती इंटरनेशनल स्कूल के आस पास सड़क दुर्घटना में घायल हो गए थे जिन्हें कुछ राहगीरों व मेजारोड पुलिस की मदद से सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रामनगर में ले जाया गया था जहां इमरजेंसी ड्यूटी पर तैनात डाक्टरों द्वारा घायल को घंटों स्ट्रेचर पर ही रखा गया और कोई भी इलाज नहीं किया जा रहा था। इस दौरान घायल की हालत इलाज के अभाव में बिगड़ती जा रही थी लेकिन चिकित्सक गहरी नींद में मस्त रहे। तत्पश्चात किसी ने इस बात की जानकारी सिरसा बाजार के ही समाजसेवी संजय सेठ को दिया तो वह आनन फानन में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र रामनगर पहुंचे और इसकी जानकारी अन्य लोगों एवं रिश्तेदारों को दिया। बताया जाता है कि रामनगर के डाक्टरों की मर चुकी मानवता को देखते हुए रिस्तेदारो ने

स्वयं प्राइवेट ऐम्बुलेंस बुलाया और गंभीर अवस्था में घायल शुभम को एक प्राइवेट हास्पिटल में ऐडमिट कराया जहां उनका इलाज चल रहा है। इस संबंध में घायल के रिश्तेदारों द्वारा बताया गया कि रामनगर अस्पताल में अधीक्षक से लेकर चिकित्सक तक सभी अस्पताल में आने वाले मरीजों से चाहे वह मेडिको लीगल हो या इलाज हो या फिर सड़क दुर्घटना में घायल लोग हों बिना सुविधा शुल्क दिया उनकी कोई सुनने वाला नहीं है चाहे मरीज जिंदा रहे या फिर तड़प तड़प कर मर जाए। उल्लेखनीय है कि एक तरफ योगी सरकार मरीजों के प्रति गंभीर हो उनके सुख सुविधा और दवा इलाज के लिए बड़े-बड़े दावे करते रहे हैं और स्वास्थ्य विभाग के अधिकारी भी उन्हीं के नक्शे कदम पर चलकर सरकारी अस्पतालों में बेहतर इलाज का डिढोरा पीटने में लगे हुए है किंतु रामनगर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र के गैर जिम्मेदार चिकित्सकों की कार्य प्रणाली ने शासन प्रशासन और विभाग के उच्चाधिकारियों की न सिर्फ पोल खोलकर कर रखा दिया है बल्कि यह भी बता दिया है कि उनके अंदर मानवता नाम की कोई चीज है ही नहीं जिसको लेकर ग्रामीणों में भारी आक्रोश है। इसे में आक्रोशित स्थानीय लोगों ने सीएमओ प्रयागराज से मामले को स्वतः संज्ञान लेने और इमरजेंसी ड्यूटी में तैनात चिकित्सकों पर कठोर कार्यवाही किए जाने की मांग किया है।

पर्यावरण संरक्षण हमारा कर्तव्य और नैतिक जिम्मेदारी : महापौर

विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर माननीय महापौर गणेश केसरवानी ने नैनी नेवादा समोगर में नगर निगम द्वारा विकसित मियावाकी जंगल का किया दौरा

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। विश्व पृथ्वी दिवस के अवसर पर माननीय महापौर गणेश केसरवानी ने नैनी नेवादा समोगर में नगर निगम द्वारा मियावाकी पद्धति से विकसित किए गए जंगल का दौरा किया। इस अवसर पर महापौर ने पर्यावरण संरक्षण के महत्व पर जोर देते हुए कहा कि ₹पर्यावरण संरक्षण हमारा कर्तव्य है और इसे बचाना हम सभी की नैतिक जिम्मेदारी है।

महापौर ने जंगल के विकास में मियावाकी तकनीक के उपयोग की सराहना की, जो घने और विविध वन क्षेत्रों को तेजी से विकसित करने में सहायक है। उन्होंने इस पहल को शहर के हरित क्षेत्र को बढ़ाने और जैव विविधता को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम बताया ।महापौर ने अपने भ्रमण में यह भी कहा की यह मियावाकी पद्धति से बनाए गए जंगल में डीपीएस स्कूल की प्रधानाचार्य प्रबंधक जी भी भ्रमण कर रही है, जिनमें उनके भ्रमण करने से इसका व्यापक विस्तार होगा एवं वह अपने स्कूल के बच्चों को भी यहां पर लाएंगे घूमाने, अनेक सामाजिक संगठन प्रयागराज वासी भी इसका आनंद ले और यहां के वातावरण से रूबारू होते हुए अपने दैनिक जीवनचर्यों को बदले यहां के भ्रमण से व्यक्ति में पर्यावरण के प्रति भावना जागेगी और पर्यावरण को बचाने में उनकी अहम भूमिका होगी,महापौर ने प्रयागराजवासियों से यह भी अपील की कि यहां के भ्रमण से इसका व्यापक प्रचार प्रसार होगा। महापौर ने नागरिकों से भी अपील की, कि वे पर्यावरण संरक्षण के लिए सक्रिय रूप से योगदान करें। उन्होंने पौधरोपण, जल संरक्षण और प्लास्टिक के उपयोग को कम करने जैसे छोटे लेकिन महत्वपूर्ण कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने का आग्रह किया। महापौर ने कहा कि इस परियोजना का उद्देश्य शहरी क्षेत्र में हरियाली को बढ़ावा देना और पर्यावरण संतुलन बनाए रखना है ।इस दौरान दिल्ली पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल डॉक्टर सुजाता सिंह प्रेसिडेंट मोनू सिंह, क्षेत्रीय पार्षद अनुराधा मंचो सिंह, राजन शुक्ला, मुकेश शुक्ला, दिवाकर सिंह, हिमालय सोनकर जी, देव द्विवेदी, संजय श्रीवास्तव, सत्यम शुक्ला, दिल्ली पब्लिक स्कूल की प्रिंसिपल डॉक्टर सुजाता सिंह, प्रेसिडेंट सोनू सिंह मौजूद रहीं।

प्रयागराज नैनी की शक्ति दुबे ने किया टॉप

नैनी। नैनी थाना अंतर्गत मामा भांजे तलाब के पास की रहने वाली शक्ति दुबे ने पहला स्थान हासिल किया, संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) ने 22 अप्रैल 2025 को सिविल सेवा परीक्षा 2024 का अंतिम परिणाम घोषित कर दिया है। इस प्रतिष्ठित परीक्षा में प्रयागराज की शक्ति दुबे ने प्रथम रैंक (AIR-1) हासिल कर शहर और देश का नाम रोशन किया है। इस वर्ष कुल 1,009 उम्मीदवारों को भारतीय प्रशासनिक सेवा (IAS), भारतीय विदेश सेवा (IFS), भारतीय पुलिस सेवा (IPS) और अन्य केंद्रीय सेवाओं (ग्रुप अ और इ) के लिए चुना गया है।

शक्ति दुबे ने पहला स्थान हासिल किया, जबकि हर्षिता गोयल ने दूसरा और डोंगरे अर्चित पराग ने तीसरा स्थान प्राप्त किया। शाह मार्गी चिराग (4), आकाश गर्ग (5), कोमल पुनिया (6), आयुषी बंसल (7), राज कृष्ण झा (8), आदित्य विक्रम अग्रवाल (9) और मयंक त्रिपाठी (10) शीर्ष 10 में शामिल हैं। 1,132 रिक्तियों के मुकाबले 1,009 उम्मीदवारों को चुना गया है। इसमें 335 सामान्य वर्ग, 109 एहर, 318 ड्इउ, 160 रउ, 87 रळ और 45

नैनी की शक्ति दुबे ने अपनी कड़ी मेहनत और लगन से यूपीएससी 2024 में टॉप कर रचा इतिहास

दिव्यांग (PwBD) उम्मीदवार शामिल हैं। 241 उम्मीदवारों का परिणाम अस्थायी रखा गया है।

यूपीएससी ने 230 उम्मीदवारों की एक समेकित रिजर्व लिस्ट भी जारी की है, जिसमें 115 सामान्य, 35 EWS, 59 OBC, 14 SC, 6 ST और 1 PwBD उम्मीदवार शामिल हैं। यूपीएससी सिविल सेवा परीक्षा 2024 की प्रारंभिक परीक्षा 16 जून 2024 को, मुख्य परीक्षा 20-29 सितंबर 2024 को और साक्षात्कार (पर्सनैलिटी टेस्ट) 7 जनवरी से 17 अप्रैल 2025 तक आयोजित हुए। कुल 5-6 लाख उम्मीदवारों ने प्रारंभिक परीक्षा दी, जिनमें से 2,845 ने साक्षात्कार के लिए क्वालिफाई किया।

शक्ति दुबे की उपलब्धि मामा भांजा तालाब, नैनी, प्रयागराज की शक्ति दुबे ने अपनी कड़ी मेहनत और समर्पण से यूपीएससी 2024 में टॉप कर इतिहास रचा है। शक्ति दुबे ने इलाहाबाद यूनिवर्सिटी से ग्रेजुएशन करने के बाद बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी से बायोकैमेस्ट्री में एमएससी की है। 2018 में पोस्ट ग्रेजुएट होने के बाद शक्ति दुबे ने सिविल सेवा परीक्षाओं की तैयारी शुरू कर दी। उनकी इस उपलब्धि ने न केवल उनके परिवार और शहर को गौरवान्वित किया है, बल्कि लाखों यूपीएससी अभ्यर्थियों के लिए प्रेरणा का स्रोत भी बनी हैं। शक्ति की सफलता पर सोशल मीडिया पर बधाइयों का तांता लगा हुआ है। शक्ति दुबे की माता जी व पिता जी साधारण स्वभाव के हैं। मीडियाकर्मियों के पहुंचते ही शक्ति दुबे की माता जी ने मीडिया कर्मियों को मीठा खिलाया और सभी मीडिया बंधुओं को धन्यवाद ज्ञापित किया।

भगवान परशुराम के जन्मोत्सव पर उरुवा चौराहे पर शोभा यात्रा का आयोजन 30 अप्रैल को

अखंड भारत संदेश

मेजा। विगत वर्ष की भाँति आगामी 30 अप्रैल को अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर पूर्व निर्धारित कार्यक्रम स्थल लेहड़ी चौराहा पेट्रोल पम्प के बगल परशुराम का भव्य जन्मोत्सव शोभा यात्रा कार्यक्रम लेहड़ी चौराहा से उरुवा चौराहा तक आयोजित किया गया है! उक्त आशय की जानकारी हनुमान सेवा समिति परशुराम सेना के अध्यक्ष आनन्द द्विवेदी, उपाध्यक्ष अतुल तिवारी, शुभम ,सुनील तिवारी, मंत्री आशीष तिवारी, प्रबंधक आशीष धतूरा ग्रुप एडमिन अखिलेश तिवारी, कोषाध्यक्ष उमेश तिवारी संगठन विस्तारक सत्यम पांडे, सलाहकार सदस्य आदि ने देते हुए कार्यक्रम को भव्य एवं सफल बनाने हेतु क्षेत्र एवं अगल बगल के गांवों के लोगों से अधिक से अधिक संख्य में पहुंचने और परशुराम के महिमा को आत्मसात करने की अपील किया है। कार्यक्रम को और अधिक भव्य बनाने हेतु इस वर्ष सवर्ण आर्मी जमुनापार की टीम भी शिरकत करेगी। हनुमान सेवा समिति परशुराम सेना के अध्यक्ष आनंद द्विवेदी ने बताया कि कार्यक्रम में इस वर्ष 30 फिट का परशुराम जी महराज का शस्त्र फरसा और ध्वज स्थापना बेहद अहम होगा जिसको लेकर लोगों मे कार्यक्रम के प्रति काफी उत्सुकता है। उन्होंने बताया कि उपरोक्त कार्यक्रम हनुमान सेवा समिति परशुराम सेना द्वारा पिछले चार सालों से लगातार सभी के सहयोग से आयोजित किया जाता रहा है। इस दौरान भगवान श्री परशुराम जी के पूजन के बाद शाम को प्रसाद वितरण का भी कार्यक्रम निर्धारित किया गया है।

पृथ्वी दिवस पर बच्चों ने चित्रकला प्रतियोगिता का किया आयोजन

अखंड भारत संदेश

सहसों। भारद्वाज गुरुकुलम संस्थान रुदापुर में मंगलवार को पृथ्वी दिवस पर विद्यालय बच्चों द्वारा पर्यावरण जागरूकता एवं चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस अवसर पर विद्यालय के प्रबंधक/संचालक ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि पृथ्वी पर स्वस्थ्य जनजीवन के लिए प्रदूषण मुक्त और शुद्ध पर्यावरण के लिए बच्चों को पृथ्वी दिवस की कविता की आवश्यकता है। जिसे दुनिया भर आज के दिन मनाया जाता है, इसे अच्छे एवं स्वच्छ पर्यावरण संरक्षण के लिए आयोजित किया जाता है। इसकी स्थापना अमेरिकी सीनेटर गेरार्ड ने पर्यावरण शिक्षा के रूप में की थी। इसे इंटरनेशनल मदर डे के रूप में भी मनाया जाता है। प्रबंधक ने बच्चों को जागरुक करते हुए कहा स्वस्थ स्वास्थ्य एवं स्वच्छ पर्यावरण के लिए वृक्ष लगाकर धरती को सजाना है और हिम्मत के साथ अपना कर्तव्य निभाता है। इंसान की जिंदगी के लिए जैसे ऑक्सीजन जरूरी है वैसे ही धरती की जिंदगी के लिए पेड़ पौधे जरूरी हैं। इन्हे संरक्षित कर हम सबको पर्यावरण सुरक्षित करना चाहिए और धरती माता का कर्ज चुकाना चाहिए। इस अवसर पर चित्रकला प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें बच्चों ने चित्रकला के माध्यम से पर्यावरण और प्रदूषण विषय पर पोस्टर प्रतियोगिता के माध्यम से शुद्ध वातावरण और प्रदूषण मुक्त होने का संदेश दिया। जिसमें साक्षी यादव प्रथम, जैनब अंसारी द्वितीय और स्वाति चौरसिया तृतीय स्थान प्राप्त किया। विद्यालय द्वारा प्रबंधक ने बच्चों को उपहार देकर पुरस्कृत करते हुए उनका उत्साहवर्धन किया। इस मौके पर विद्यालय के समस्त शिक्षक एवं बच्चे उपस्थित रहे।

पर्यावरण संरक्षण के लिए जागरूकता और स्वच्छता का संदेश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। विश्व पृथ्वी दिवस पर संगम नोज पर जिला गंगा समिति, गंगा टास्क फोर्स, गंगा विचार मंच के संयुक्त प्रयास से जन जागरूकता और स्वच्छता श्रमदान के माध्यम से पर्यावरण संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक किया गया । कार्यक्रम में कर्नल सौरभ मल्होत्रा , नमामि गंगे संयोजक अनामिका चौधरी, जिला परियोजना अधिकारी एषा सिंह, सूबेदार सर्वेश तिवारी ,निर्मल कांत उपस्थित रहे ' । कर्नल सौरभ मल्होत्रा ने कहा कि पृथ्वी दिवस का उद्देश्य प्रकृति संसाधनों के संरक्षण हेतु आम जन में जिम्मेदारी की भावना जगाना है। डीपीओ एषा सिंह ने बताया कि इस वर्ष की थीम ₹हमारी शक्ति, हमारा ग्रह₹ है, जो नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ावा देने पर केंद्रित है। संयोजक अनामिका चौधरी ने गंगा नदी को स्वच्छ रखने के लिए सभी से सहयोग की अपील की। निर्मलकांत ने फॉरेस्ट कवर बढ़ाने के महत्व पर प्रकाश डाला, जिससे धरती के तापमान में कमी लाई जा सकती है। सूबेदार सर्वेश तिवारी ने दैनिक जीवन में पर्यावरण अनुकूल कार्यों को अपनाने की आवश्यकता पर बल दिया। कार्यक्रम में उपस्थित संस्थान एवं स्वच्छ ग्राही के मदद से संगम तट पर जमा हुए प्लास्टिक, कूड़ा और अन्य अपशिष्ट पदार्थों को एकत्रित कर स्वच्छता अभियान चलाया गया तथा स्थानीय जनमानस को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक किया गया ' कार्यक्रम में हवलदार बृजेश, हवलदार मनोज, नायक मुकेश, नायक महेंद्र, सीमा आदि उपस्थित रहे ।

दहेज हत्या में फरार चल रहे दो आरोपियों को पुलिस ने भेजा जेल

उतराव। उतराव थाना क्षेत्र के बबुआ पुर जलालपुर गांव में दहेज हत्या में फरार चल रहे मृतिका के पति व देवर को पुलिस ने गिरफ्तार कर चालान कर दिया। ज्ञात हो कि 2 माह पूर्व बबुवापुर थाना उतराव निवासी वीरेंद्र कुमार की पत्नी दहेज को लेकर दरिंदो ने दहेज के लिए मार का फांसी पर लटका दिया था ।मृतिका के पिता की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा पंजीकृत कर मौके पर गिरफ्तार मृतिका की बहन व ससुर को जेल भेज दिया था। पुलिस ने फरार चल रहे अभियुक्त वीरेंद्र कुमार पुत्र लाल बहादुर व देवर राजेंद्र पुत्र लाल बहादुर निवासीगढ़ बबुआ पुर जलालपुर को नागनाथपुर पुलिया के पास से गिरफ्तार किया। पुलिस ने गिरफ्तार अभियुक्तो का न्यायालय के लिए चालान कर दिया। थाना अध्यक्ष उतराव पंकज कुमार त्रिपाठी ने बताया कि उक्त प्रकरण में दो नंनद एक जेठ एक देवर और सास फरार चल रहे हैं। वहीं पति देवर व ससुर मृतिका की बहन को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया है।

शराबी युवक ने प्राथमिक विद्यालय के अध्यापक पर किया हमला, शिक्षक घायल

अखंड भारत संदेश

शंकरगढ़। शंकरगढ़ थाना क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले जूही कोठी गांव में प्राथमिक विद्यालय के एक अध्यापक पर शराब के नशे में धुत एक युवक द्वारा जानलेवा हमला किए जाने का मामला सामने आया है। इस हमले में शिक्षक गंभीर रूप से घायल हो गए हैं ।घायल शिक्षक ऋषि प्रताप सिंह, जो थाना खीरी के कौदी गांव के निवासी हैं, वर्तमान में जूही कोठी के प्राथमिक विद्यालय में अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। बताया जा रहा है कि विद्यालय के पास ही देसी शराब की दुकान स्थित होने के कारण वहां दिन-रात शराबियों का जमावड़ा लगा रहता है, जिससे विद्यालय का माहौल खराब हो रहा है ।अध्यापक ऋषि प्रताप ने बताया कि गांव का एक व्यक्ति कौशल प्रतिदिन शराब पीकर विद्यालय परिसर के सामने अभद्रता करता है और बच्चों व शिक्षकों को गालियां देता है। घटना वाले दिन भी कौशल शराब पीकर विद्यालय पहुंचा और गाली-गलौज करने लगा। जब अध्यापक ने उसे समझाने का प्रयास किया तो कुछ देर बाद उसने लाठी-डंडों से हमला कर दिया। हमले में अध्यापक गंभीर रूप से घायल हो गए, जिन्हें वहां मौजूद लोगों ने किसी तरह बचाया ।इस हमले की लिखित शिकायत शंकरगढ़ थाने में की गई है। ऋषि प्रताप का आरोप है कि आरोपी कौशल उन्हें एससी/एसटी एक्ट और अन्य संगीन धाराओं में फंसाने की धमकी दे रहा है। चूंकि उनकी नियुक्ति इसी गांव के विद्यालय में है, इसलिए उन्होंने अपनी सुरक्षा को लेकर उच्च अधिकारियों से सहायता की मांग की है ।स्थानीय लोगों और विद्यालय प्रबंधन का कहना है कि यदि विद्यालय जैसे 'विद्या के मंदिर' के आसपास शराबियों का अड्डा बना रहेगा, तो बच्चों की पढ़ाई और भविष्य पर गंभीर असर पड़ेगा। उन्होंने आबकारी विभाग और प्रशासन से मांग की है कि विद्यालय से महज 100 मीटर की दूरी पर स्थित शराब की दुकान को किसी अन्य स्थान पर स्थानांतरित किया जाए।

सूचना

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि भारतीय जीवन बीमा की पॉलिसी संख्या 313 873 908 में भूल से मेरा नाम लल्लू राम कुशवाहा पुत्र झुराई निवासी-बेरूवा जनपद कौशांबी लिख गया है जो गलत है मेरा सही नाम रामसूरत पुत्र झुराई निवासी बेरूवा जनपद कौशांबी है।

रानीगंज विधायक ने पाइप पेयजल योजना गोकुला का किया निरीक्षण

● निरीक्षण के दौरान विधायक द्वारा निर्देशित किया गया कि ग्रामवासियों को शेष गृह संयोजन का कार्य पूर्ण कराते हुए पेयजल सप्लाई रेगुलर एवं सुचारू रूप से सुनिश्चित करायें

अखंड भारत संदेश

निरीक्षण करते विधायक डा. आर0के0 वर्मा

प्रतापगढ़। विधायक रानीगंज डा0 आर0के0 वर्मा द्वारा विधानसभा रानीगंज के अंतर्गत जल जीवन मिशन ह्यहर घर जलह्ल योजनान्तर्गत निर्मित पाइप पेयजल योजना ह्यगोकुलाह्ल का निरीक्षण किया गया। विधायक रानीगंज द्वारा जलकल परिसर में निर्मित पम्प हाउस, शिरोपरि जलाशय, सोलर पैनल एवं अन्य कार्यों को देखा गया जो कि समस्त कार्य पूर्ण कर लिये गये है। इस योजना से गोकुला ग्राम पंचायत के सभी 04 मजरों में सप्लाई किया जा रहा है। योजना अंतर्गत नलकूप 1 नग, पम्प हाउस 1 नग, शिरोपरि जलाशय 150 किलीध्16 मी, सोलर पैनल 19.50 किलोवॉट, जनरेटर 20 केवीए, पाइप लाइन 12.90 किमी0, हाउस कनेक्शन 295 नग कराया गया है। विधायक डा0 आर0के0 वर्मा द्वारा ग्रामवासियों से संवाद किया गया तो ग्रामवासियों द्वारा अवगत कराया गया कि पेयजल सप्लाई रेगुलर होती है। विधायक द्वारा निर्देशित किया गया कि ग्रामवासियों को शेष गृह संयोजन का कार्य पूर्ण कराते हुए पेयजल सप्लाई रेगुलर एवं सुचारू रूप से सुनिश्चित कराये एवं कोई समस्या होने पर उसका तत्काल निस्तारण कराये। निरीक्षण के समय अधिशासी अभियन्ता जल निगम (ग्रामीण) तौसीफ अहमद, अधिशासी अभियन्ता (वि0ध्यां0) सैय्यद मो0 शाबाज, सहायक अभियन्ता अंकित श्रीवास्तव, जूनियर इंजीनियर राकेश यादव, कार्यरत फर्म के परियोजना प्रबन्धक सोमेश शर्मा, सहा0 महाप्रबन्धक जनार्दन त्रिपाठी एवं फर्म के ब्लाक इंचार्ज तथा ग्रामवासी उपस्थित रहे।

भेड़ पालन योजना के लाभार्थी के स्थापित यूनिट का किया निरीक्षण

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। जनपद मे भेड़ पालन योजना में प्रति इकाई रुपए 170000 होगा जिसका 90 प्रतिशत रुपए 153000 राज्यांश (अनुदान) तथा 10 प्रतिशत रुपए 17000 लाभार्थी अंश होगा। जिसके अन्तर्गत जनपद के सीमान्त अथवा भूमिहीन कृषक की आय में वृद्धि व आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से भेड़ पालन योजना में संतोष कुमारी पत्नी हरिश्याम निवासी ग्राम-छेमर सरैया साहबगंज को भेड़ पालन योजना से लाभान्वित किया गया है। जिसमें लाभार्थी द्वारा 01 नर वयस्क मेढ़ा, मादा भेड़ 20 का क्रय किया गया है। तत्क्रम में भेड़ पालन योजना में चयनित महिला लाभार्थी के स्थापित यूनिट का स्थलीय निरीक्षण पशु चिकित्साधिकारी लक्ष्मणपुर द्वारा किया गया। लाभार्थी द्वारा मानक के अनुसार यूनिट की स्थापना की गयी है, वर्तमान में लाभार्थी द्वारा योजना का संचालन किया जा रहा है। इस योजना से महिला लाभार्थी की आय में वृद्वि व आत्मनिर्भर की ओर बढ़ रही है।

न्यूज झरोखा

अधिवक्ता संघ के चुनाव में दूसरे दिन चैदह प्रत्याशियों ने किया नामांकन

लालगंज। संयुक्त अधिवक्ता संघ के चुनाव में नामांकन के दूसरे दिन मंगलवार को अध्यक्ष पद समेत विभिन्न पदो पर चैदह अधिवक्ताओं ने धूमधाम से नामांकन किया। गाजेबाजे के बीच समर्थकों संग उम्मीदवार चुनाव समिति के कार्यालय लाइब्रेरी हाल पहुंचते दिखे। अध्यक्ष पद पर संतोष कुमार पाण्डेय ने चुनाव समिति के अध्यक्ष देवी प्रसाद मिश्र के समक्ष नाम निर्देशन पत्र दाखिल किया। वही उपाध्यक्ष पद पर आशीष कुमार तिवारी व राजेश कुमार द्विवेदी तथा महामंत्री पद पर अरविन्द पाण्डेय तपन, देवेन्द्र कुमार तिवारी, संतोष कुमार सरोज, राजेश कुमार पाल व हरिश्चंद्र पाण्डेय ने नामांकन दाखिल किया। वहीं सह मंत्री पद पर अभिषेक शुक्ल व सुरेन्द्र कुमार कोरी तथा कोषाध्यक्ष पद पर हरिनारायण पाण्डेय एवं सदस्य कार्यकारिणी पद पर नवनीत पाण्डेय, अतुल तिवारी, दुर्गेशमणि तिवारी ने नामांकन पत्र प्रस्तुत किया। चुनाव समिति के प्रवक्ता ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने बताया कि आज नामांकन के अंतिम दिन बुधवार को प्रातः दस बजे से अपरान्ह तीन बजे तक नामांकन किये जा सकेंगे। समिति के महामंत्री विकास मिश्र ने बताया कि चैबीस अप्रैल को नामांकन पत्रों की जांच की जाएगी। इस मौके पर शिवाकांत उपाध्याय, वीरेन्द्र सिंह, कमलेश तिवारी, राजेन्द्र प्रसाद विश्वकर्मा, संजय सिंह, प्रमोद सिंह, रमेश पाण्डेय, इरफान, घनश्याम सरोज मौजूद रहे।

मुठभेड़ में गोली से घायल बदमाश के खिलाफ गंभीर धाराओं मे केस

लालगंज। बदमाश के साथ हुई पुलिस मुठभेड़ में आरोपी के खिलाफ हत्या के प्रयास तथा मुठभेड समेत गंभीर धाराओ मे केस दर्ज किया गया है। लालगंज कोतवाल नीरज यादव की तहरीर पर पुलिस ने मंगलवार की देर रात मुठभेड के आरोपी लालगंज कोतवाली के कोला का वन निवासी सलमान पुत्र अब्दुल हमदी तथा एक अन्य बदमाश के खिलाफ हत्या के प्रयास व पुलिस मुठभेड समेत कई गंभीर धाराओं में केस दर्ज किया है। इधर मुठभेड में पुलिस द्वारा दबोचे गये बदमाश सलमान का बुधवार को प्रयागराज मेडिकल कालेज मे पुलिस अभिरक्षा में इलाज जारी बताया गया। बतादें लालगंज कोतवाली पुलिस ने मंगलवार की देर रात सराय रायजू गांव के समीप जंगल में घेराबंदी कर बदमाशों को ललकारा। इस पर घायल सलमान ने पुलिस पर फायर झोंक दिया। पुलिस की जबाबी फायरिंग में सलमान के पैर में गोली लग गयी। आननफानन में उसे पुलिस ट्रामा सेण्टर ले आयी। यहां से चिकित्सकों ने प्रारंभिक इलाज कर जिला अस्पताल रेफर कर दिया। वहां से देर रात गोली से चुटहिल सलमान को प्रयागराज मेडिकल कालेज रेफर कर दिया गया।

भक्त प्रहलाद की कथा सुनकर भावविभोर हुए श्रद्धालु

प्रतापगढ़। उदयपुर क्षेत्र के राहाटीकर में चल रही श्रीमदभागवत कथा में कथाव्यास ने भक्त प्रहलाद के चरित्र की कथा का विस्तार से वर्णन किया। कथाव्यास आचार्य संतोष जी महराज ने बताया कि हिरण्य कश्यप नामक दैत्य ने अपने घोर तप से ब्रम्हाजी को प्रसन्न कर यह वरदान प्राप्त किया कि वह न दिन न रात न घर के अंदर न बाहर मर सके। उसे न कोई हथियार काट सके और न ही आग जला सके। वह न पानी में भी डूबकर न मरे। हिरण्य कश्यप का पुत्र प्रहलाद भगवान विष्णु का परम भक्त था लेकिन हिरण्य कश्यप भगवान विष्णु को अपना शत्रु मानता था। आचार्य ने बताया कि अपने पिता के तमाम अत्याचारों के बावजूद प्रहलाद ने भगवान नारायण के प्रति अपनी भक्ति को डिगने नही दिया। इससे प्रसन्न होकर भगवान ने नरसिंह अवतार लेकर हिरण्य कश्यप का वध किया। कथाव्यास ने बताया कि श्रीमदभागवत कथा वह अमृत है जिसका चाहे जितना पान किया जाय लेकिन तृप्ति नहीं होती है। कथा के दौरान राधाकृष्ण संकीर्तन में भी श्रद्धालु रमे दिखे। मुख्य आयोजक जगदीश नारायण मिश्र व विमला मिश्रा ने रोली चंदन अक्षत से व्यासपीठ का विधिविधान से पूजन अर्चन किया। इस मौके पर विनय प्रकाश मिश्र, वेदप्रकाश मिश्र, सूर्यप्रकाश, कृपाशंकर, छोटेलाल, रवि प्रकाश मिश्र, विजय नाथ, संतोष आदि मौजूद रहे।

असलहे के दम पर ले गये दुकान से नगदी व सामान

● पट्टी कोतवाली के उड़ैयाडीह बाजार का मामला

अखंड भारत संदेश

पट्टी। कोतवाली निवासी एक विवाहिता ने गांव के निवासी कुछ युवकों पर पशुआहार का रुपये मांगने पर गाली गलौज करने व गल्ले से रुपये निकालने का आरोप लगाते हुए कोतवाली में तहरीर दी है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

उडैयाडीह गांव निवासी कमलेश पत्नी प्रभाशंकर मिश्र ने मंगलवार की सुबह पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर आरोपित किया है कि उडैयाडीह-रानीगंज मार्ग पर स्थित पेट्रोल पंप पर उसका रिहायशी मकान है। उसी में उसने पशुआहार की दुकान खोल रखी है। घटना 21 अप्रैल 2025 की लगभग रात्रि नौ बजे की है। गांव के आधा दर्जन युवक उसकी दुकान पर पहुंचे और दस बोरी पशुआहार देने की बात की। जब उसने पशुआहार का रुपये मांगा तो आरोप है कि वो लोग गाली गलौज करने लगे और मारपीट पर उतारु हो गए। साथ ही कट्टा दिखाकर गल्ले में रखा हुआ 20 हजार रुपये निकाल लिया। जब हल्ला गुहार पर उसकी बहू पहुंची तो आरोप है कि सोने की चैन भी छीन लिए और प्रार्थिनी को मारपीट कर घायल कर दिया। हल्ला गुहार पर जब आसपास के लोग एकत्रित हुए तो आरोपी धमकी देते हुए भाग निकले। विवाहिता ने इसकी सूचना तुरंत ही 112 को दी। महिला ने पट्टी कोतवाली में नामजद तहरीर देते हुए आरोपियों के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है। इस संबंध में इंस्पेक्टर अवन कुमार दीक्षित ने बताया कि मामले में प्रार्थना पत्र पीडिता द्वारा मिला है। जांच पडताल कराई जा रही है। मामला सही पाए जाने पर कार्रवाई की जायेगी।

पुरानी रंजिश को लेकर दो पक्षों में मारपीट

बेलखरनाथ धाम। पुरानी रंजिश को लेकर दो पक्षों में जमकर मारपीट हुई। जिसमें दो महिलाएं सहित तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। कंधई थाना क्षेत्र के ईशनपुर निवासी भोलानाथ तिवारी मंगलवार की सुबह करीब साढ़े बजे परिवार के साथ घर पर बैठे थे तभी पड़ोसी श्याम शंकर तिवारी अपने घर के आधा दर्जन महिला पुरुष को लेकर पीड़ित के पास पहुंचे और किसी बात को लेकर भद्दी भद्दी गालियां देने लगें पीड़ित के विरोध करने पर आरोपितों ने घर में घुसकर लाठी डंडा सरिया से हमला कर दिया। जिसमें पीड़ित व उसके घर की दो महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गए।लोगों के बीच बचाव पर किसी तरह पीड़ित व उनके परिवार वालों की जान बची। घायलों को सीएचसी बेलखरनाथ धाम लेकर लाया गया जहां हालत गंभीर देखते हुए मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया।पीड़ित ने इस मामले में पुलिस को नामजद तहरीर दी है।

न्याय पालिका में जवाबदेही तय करने हेतु अधिवक्ता परिषद सौपेगा ज्ञापन

● बैठक में प्रमुख रूप से उच्च न्याय पालिका में जवाबदेही सुनिश्चित किये जाने के संबंध में 24 अप्रैल 2025 को जिला अधिकारी को दिये जाने वाले ज्ञापन के सम्बन्ध में चर्चा की गई

अखंड भारत संदेश

बैठक में शामिल अधिवक्तागण

प्रतापगढ़। अधिवक्ता परिषद अवध प्रतापगढ़ ईकाई की एक आवश्यक बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रमुख रूप से उच्च न्याय पालिका में जवाबदेही सुनिश्चित किये जाने के संबंध में 24 अप्रैल 2025 को जिला अधिकारी को दिये जाने वाले ज्ञापन के सम्बन्ध में चर्चा की गई। इस मौके पर परिषद के महामंत्री शिवेश कुमार शुक्ल एडवोकेट ने बताया कि अखिल भारतीय अधिवक्ता परिषद के राष्ट्रीय कार्यकारिणी द्वारा उच्च न्यायपालिका की सुचिता,पारदर्शिता व जवाबदेही सुनिश्चित किए जाने के विषय में आंध्र प्रदेश के विजयवाड़ा में हुई बैठक में प्रस्ताव पारित किया गया था। उक्त संबंध में अवध प्रांत की प्रांतीय महामंत्री श्रीमती मीनाक्षी परिहार सिंह के निर्देश पर राष्ट्रीय परिषद की सदस्य किरण बाला सिंह के नेतृत्व में 24 अप्रैल 2025 को जिला अधिकारी को ज्ञापन सौपा जाएगा। ज्ञापन सौंपने में प्रमुख रूप से कोषाध्यक्ष भरत लाल, उपाध्याय रवि सिंह, राजाराज सरोज, रूप नारायण सरोज, आशीष मौर्य, सतीश दूबे, आशीष गुप्ता, जया शर्मा, अभिषेक शर्मा, ममता सरोज,वासिनी विश्वकर्मा, दीपक मिश्र, मृदुल गुप्ता, शिव कुमार, राहुल सिंह, संतोष दूबे, विभूति शुक्ल, अजय ओझा, आरजू, मनोज, अमरीश तिवारी, राकेश चैरसिया, रवि श्रीवास्तव, जेपी सिंह सहित आदि शामिल रहेंगे।

पड़ोसियों ने कुनबे को पीटा छः पर रिपोर्ट दर्ज

बेलखरनाथ धाम। तीन दिन पूर्व हुई मारपीट के मामले में पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर आधा दर्जन पर मुकदमा दर्ज किया है। कधंई थाना क्षेत्र के सराय जमुहारी निवासी रामरती ने तहरीर देकर बताया कि पुरानी रंजिश को लेकर पड़ोसी काफी समय से खुन्नस को लेकर गाली गलौज कर रहे थे।इसी बीच रामरती ने मना किया तो आरोपितों ने बीते रविवार को लाठी डंडे से रामरती तथा उसके पति राम आसरे, बेटा सचिन की जमकर पिटाई करते हुए में घुसकर तोड़फोड़ की। सूचना पर पहुंची पुलिस ने तीनों घायलों को इलाज के अस्पताल भेजा। पीड़ित रामरती की तहरीर पर कंधई पुलिस ने सराय जमुहारी निवासी रमाकांत अभिषेक, अखिलेश कृष्णा, प्रमिला देवी व नेहा के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है।एसओ कधंई गुलाबचंद सोनकर ने बताया कि पुरानी रंजिश को लेकर एक पक्ष को मारा-पीटा गया था मुकदमा दर्ज कर जांच की जा रही है।

प्रशिक्षण हेतु 25 अप्रैल तक उद्यान विभाग में करें आवदेन

प्रतापगढ़। जिला उद्यान अधिकारी सुनील कुमार शर्मा ने बताया है कि उ0प्र0 राज्य औद्यानिक सहकारी विपणन संघ (हाफेड) लखनऊ द्वारा प्रदेश से आम के विपणन/ निर्यात को प्रोत्साहित करने हेतु एपीड़ा नई दिल्ली के वित्तीय सहयोग से निर्यात योग्य आम की उपलब्धता हेतु आम की तुड़ाई पूर्व एवं उपरान्त प्रबन्धन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन निरन्तर कराया जा रहा है। इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रगतिशील व जागरूक आम उत्पादकों को आम के उत्पादन से लेकर विपणनध्निर्यात तक अपनायी जाने वाली विविध नवीनतम तकनीकी/ सामयिक जानकारी उपलब्ध करायी जाती है। इसके साथ-साथ हाफेड द्वारा राज्य कृषि उत्पादन मण्डी परिषद उ0प्र0 के वित्तीय सहयोग से आम के विपणन/ निर्यात के प्रोत्साहन हेतु प्रदेश से बाहर अन्य प्रदेशों यथा मुम्बई, पूणे, हैदराबाद, बंगलुरू, कोलकाता आदि प्रदेशों में आम बायर-सेलर मीट कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जा रहा है जिसमें जनपद के प्रगतिशील आम उत्पादकों को उनके उत्पाद के साथ सीधे निर्यातकों/ ट्रेडर्स से समन्वय का अवसर प्राप्त होगा तथा उत्पादकों को विपणन/निर्यात में वृद्धि होगी। जिला उद्यान अधिकारी ने जनपद के इच्छुक प्रगतिशील/ जागरूक उत्पादकों (जो प्रशिक्षण में भाग लेना चाहते हो) कार्यालय जिला उद्यान अधिकारी कटरा रोड प्रतापगढ़ में आम उत्पादन से सम्बन्धित पूर्ण विवरण दिनांक 25 अप्रैल 2025 तक अपना आवेदन उपलब्ध करा दें जिससे एक दिवसीय प्रशिक्षण हेतु सम्बन्धित को सूचित किया जा सके। अधिक जानकारी हेतु कार्यालय जिला उद्यान अधिकारी कटरा रोड, प्रतापगढ़ से सम्पर्क किसी भी कार्य दिवस में कर सकते है।

जमीन विवाद में महिला पर कुल्हाड़ी से हमला

पट्टी। जमीन विवाद को लेकर दो पक्ष आपस में भिड़ गए। एक पक्ष की महिला पर कुल्हाड़ी से हमला किया गया जिससे उसका सिर फट गया। कोतवाली इलाके के गांव रेडीगारापुर गांव की रहने वाली सालिया बेगम ने मंगलवार की दोपहर पुलिस को प्रार्थना पत्र आरोप लगाया है कि वह अपनी जमीन में नहानी बना रही थी। पड़ोसियों ने एक राय होकर महिला के सर पर कुल्हाड़ी से वार कर दिए, जिसमें महिला का सिर फट गया। पीड़िता ने घटना की सूचना डायल 112 पुलिस को दी सूचना पर पहुंची पुलिस घायल महिला को 108 एंबुलेंस की मदद से इलाज के लिए सीएचसी लेकर आई इलाज के बाद पीड़ित महिला ने नामजद आरोपियों के खिलाफ प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। कोतवाल अवन कुमार दीक्षित ने बताया कि घायल महिला का मेडिकल परीक्षण कराया गया है, और मामले की जांच पड़ताल कर अग्रिम कार्रवाई की जा रही है।

भूमि संरक्षण इकाई की संचालित योजनाओं का उठायें लाभ

प्रतापगढ़। भूमि संरक्षण अधिकारी प्रथम चमन सिंह ने बताया है कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा कृषि विभाग के माध्यम से किसानों के हितार्थ खेत तालाब योजना, पंडित दीनदयाल उपाध्याय किसान समृद्धि योजना, वर्षा सिंचित क्षेत्र विकास योजना (आर0ए0डी0) एवं वाटरशेड विकास घटक पीएमकेएसवाई-2.0 जनपद के विभिन्न विकास खण्ड के चयनित ग्रामों में संचालित की जा रही है। किसान भाई भूमि संरक्षण कार्यालय कटरा रोड या कृषि विभाग के कर्मचारियों से सम्पर्क कर भूमि संरक्षण इकाई की संचालित योजनाओं का लाभ प्राप्त कर सकते है अथवा भूमि संरक्षण अधिकारी के मोबाइल नम्बर 7839882340 पर सम्पर्क कार जानकारी प्राप्त कर सकते है।उन्होने खेत तालाब योजना के सम्बन्ध में बताया है कि कृषक द्वारा स्वयं के खेत पर 22 मीटर लम्बाई .20 मीटर चैड़ाई . 3 मीटर गहराई का तालाब खुदवाने पर धनराशि 52500 रुपए का अनुदान कृषक को दिया जाता है, साथ ही स्प्रिंकलर, ड्रिप सिंचाई पद्धति लगवाना अनिवार्य है जिस पर 90 प्रतिशत का अनुदान उद्यान विभाग से दिया जायेगा एवं पम्प सेट खरीदने पर अधिकतम धनराशि 15000 रुपए का अनुदान प्रति लाभार्थी देय होगा। पंडित दीनदयाल उपाध्याय किसान समृद्धि योजनान्तर्गत बिहड़ बंजर सुधार कार्यक्रम के अन्तर्गत मिट्टी कटाव रोकने एवं वर्षा जल संरक्षण हेतु अवरोध बांधध्समोच्च रेखीय एवं मार्जिनल बांध का कार्य किया जाता है, चयनित ग्रामों में वसीरपुर, पश्चिम देउम, चकसारा, रतनमई, पूरे बेनीराम, दिलीपपुर में फसल उत्पादन बढ़ाने हेतु प्रति हेक्टेयर 3500 रुपए का अनुदान कृषकों को दिया जायेगा। वर्षा सिंचित क्षेत्र विकास योजनान्तर्गत कृषकों की सतत आय सुनिश्चित करने हेतु प्रति लाभार्थी 30000 रुपए का अनुदान फसल उत्पादन, पौध रोपण, मधुमक्खी पालन, पशुपालन, बकरी पालन, हरीखाद, चारा भण्डारण एवं वर्मी कम्पोस्ट आदि कार्य कराने पर दिया जाता हैं।इसी प्रकार वाटर शेड विकास घटक-प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना जनपद के विकास खण्ड आसपुर देवसरा एवं पट्टी के चयनित 73 ग्रामों में संचालित है। वर्षा जल संचयन हेतु तालाब जीर्णोद्धार, अमृत सरोवर, अवरोध बांध, मार्जिनल बांध का निर्माण किया जाता है तथा उत्पादन प्रणाली अन्तर्गत सतत कृषि उत्पादन हेतु पौध रोपाण, पशुपालन, दलहनी, तिलहनी एवं मिलेट्स (श्री अन्न) का उत्पादन बढ़ाने हेतु प्रति हेक्टेयर 6000 रुपए का अनुदान प्रति कृषकध्प्रति परिवार दिया जाता है। भूमि संरक्षण अधिकारी ने सभी कृषक भाईयों से अनुरोध किया है कि संचालित योजनाओं का लाभ प्राप्त कर जल, जंगल, जमीन बचाने हेतु योजना में सहभागिता बढ़ाकर सरकार की योजनाओं का अधिकाधिक लाभ उठाये।

आईटीआई में 24 को होगा कैम्पस इन्टरव्यू

प्रतापगढ़। राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान के नोडल प्रधानाचार्य आलोक कुमार ने बताया है कि भारत की सबसे बड़ी कार मैन्युफैक्चरिंग कम्पनी सुजुकी मोटर गुजरात राजकीय औद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान प्रतापगढ़ के परिसर में दिनांक 24 अप्रैल 2025 को आ रही है। उन्होने बताया है कि कैम्पस इन्टरव्यू के अन्तर्गत टर्नर, वेल्डर, फिटर, मशीनिष्ट, इलेक्ट्रीशियन, मोटर मैकेनिक व्हीकल, ट्रैक्टर मैकेनिक, पेन्टर जनरल, वायरमैन, इलेक्ट्रानिक मैकेनिक, सी0ओ0ई0 के अन्तर्गत सन् 2017 से 2024 तक के उत्तीर्ण कर चुके प्रशिक्षार्थियों की आवश्यकता है। कम्पनी में केवल युवक (उम्र सीमा 18 से 26 वर्ष) भाग लेकर रोजगार के अवसर प्राप्त कर सकते है। कम्पनी अप्रेंटिस के अन्तर्गत 18300 रुपए से 24550 तक प्रतिमाह भुगतान करेगी। विस्तृत जानकारी के लिये संस्थान के कैम्पस सेल सत्येन्द्र मौर्य (टीपीओ) एवं अशोक कुमार सहायक (टीपीओ) से सम्पर्क कर सकते है।

पृथ्वी दिवस पर पोस्टर प्रतियोगिता में अविरल ने मारी बाजी

अखंड भारत संदेश

बेलखरनाथ धाम। पृथ्वी दिवस के मौके पर मंगलवार को मॉडल प्राथमिक विद्यालय पिपरी खालसा में आयोजित चित्रकला पोस्टर प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें में कक्षा 5 के छात्र अविरल मनि ने प्रतियोगिता जीतकर बाजी मार ली। इस मौके पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रधानाध्यापिका डॉ प्रीति मिश्रा ने कहा कि दुनिया भर में प्रदूषण, ग्लोबल वार्मिंग और जंगलों की कटाई होती रहेगी तो पृथ्वी का अस्तित्व संकट में आ जाएंगा।इसलिए इसे स्वच्छ व हरा भरा रखना आवश्यक है।इस मौके पर आयोजित चित्रकला पोस्टर प्रतियोगिता में कक्षा पांच के छात्र अविरल मनि ने जहां प्रथम स्थान प्राप्त किया वहीं शौर्य मिश्रा द्वितीय तथा नंदिनी वैष्णवी तृतीय स्थान पर रही। इसके अलावा पोस्टर प्रतियोगिता में भाग लेने वाले सभी बच्चों को सांत्वना पुरस्कार विद्यालय की ओर से दिया गया।इस दौरान सुभाष चंद्र मिश्रा, फरहान अहमद, पंकज मिश्रा, यशवंत, पूजा चैरसिया, शमशुननिशां, मीरा देवी आदि मौजूद रहे।इसी तरह प्राथमिक विद्यालय मधुपुर कांपा में इको क्लब द्वारा पृथ्वी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें विशिष्ट शिक्षक संघ के जिलाध्यक्ष डॉ विनोद त्रिपाठी ने बताया कि पृथ्वी दिवस पर लोगों को पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं जैसे हवा और दूषित पानी, प्लास्टिक, कचरा और पेड़ों की कटाई के बारे में जागरूक करना है।इस मौके पर आयोजित एक कार्यक्रम में विद्यालय की छात्र-छात्राओं में इको फ्रेंडली पोस्टर प्रतियोगिता में भाग लिया, जिसमें अंशु तिवारी, रागनी वर्मा, वैभव शुक्ला, राहत गौतम तथा मानसी को सम्मानित किया गया।इस मौके पर राजेंद्र प्रताप सिंह, देवानंद मिश्र, मोहम्मद शोएब, नीतू सिंह, श्वेता मिश्रा, योगिता पांडे, सुरुचि सिंह, विनीत मिश्रा, अर्चना यादव, संजीव दुबे आदि मौजूद रहे।

ससुर ने दामाद पर पिटाई करने का लगाया आरोप

पट्टी। अधेड़ ने अपने दामाद पर मारने पीटने का आरोप लगाते हुए पट्टी कोतवाली में तहरीर दी है। पडरी मुस्तर्का गांव निवासी शिवबरन पुत्र रमेश्वर ने पट्टी कोतवाली में शिकायती पत्र देकर आरोपित किया है कि उसका दामाद सुन्दर लाल पुत्र राम निहोर नशे की हालत में अपने घर रामकोला में 21 अप्रैल 2025 सोमवार की देर रात लगभग आठ बजे अपने पुत्र को काफी बेरहमी से पीट रहा था। जब उसने अपने दामाद को रोकने की कोशिश की तो आरोप है कि उसने उसकी भी लाठी-डंडे से पिटाई शुरू कर दी। शोर पर उसकी पत्नी व उसकी पुत्री बीच बचाव करने पहुंची तो उसकी पिटाई भी शुरू कर दी। जब आसपास के लोग पहुंचे तो उसकी जान बच सकी। पीड़ित ने पट्टी कोतवाली में तहरीर देकर आरोपी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

हनुमान मंदिर पर आयोजित भंडारे में उमड़ी भीड़

अखंड भारत संदेश

भण्डारे का प्रसाद ग्रहण करते लोग

प्रतापगढ़। शहर के ट्रेजरी चैराहा स्थित हनुमान मंदिर पर सुंदर काण्ड पाठ के उपारांत भव्य भंडारा का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम समाजसेवी शिवेंद्र सिंह एवं जबर सिंह के आयोजकत्व में किया गया। इस मौके पर भारी संख्या में शामिल हुए श्रद्धालुओं ने पवनपुत्र हनुमान जी का पूजन अर्चन करने के साथ भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया। इस दौरान भक्तों की भीड़ उमड़ी रही। मंदिर पर शाम तक भजन-कीर्तन के साथ-साथ भंडारा चलता रहा है। आयोजित कार्यक्रम में मंहत मनोज ब्रह्मचारी, भाजपा अध्यक्ष आशीष श्रीवास्तव, सदर विधायक राजेंद्र मौर्य, दिनेश गुप्ता,नगर पंचायत गड़वारा के अध्यक्ष प्रतिनिधि सचिन सिंह शोलू, जूबाए पूर्व महामंत्री संतोष सिंह, जूबाए पूर्व अध्यक्ष रोहित शुक्ल, प्रदीप चित्रांशी, अशोक श्रीवास्तव, सहित भारी संख्या अधिवक्ता व अन्य लोग शामिल होकर पूजा-अर्चन कर भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया।

ससुराल गए युवक की पेड़ पर लटकी मिली लाश

अखंड भारत संदेश

सवाल खड़े हैं कि क्या युवक आत्महत्या करने गया था ससुराल पत्नी से चल रहा था विवाद

महेवाघाट कौशाम्बी। महेवा घाट थाना क्षेत्र के अँधावा गांव में एक युवक की पेड़ से लटकी लाश मिली है सूचना पर मौके पर भीड़ लग गई है मामले की सूचना पुलिस को दी गई तो पुलिस भी मौके में पहुंच गई है पुलिस में मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है मृतक मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के खेरवा गांव का रहने वाला है और उसकी ससुराल महेवाघाट थाना क्षेत्र के अँधावा गांव में थी जहां 3 दिन पहले वह ससुराल गया था जबकि उसका अपनी पत्नी से पहले से विवाद चल रहा था अब सवाल खड़े हो गए हैं कि क्या पत्नी से विवाद के बाद आत्महत्या करने के लिए युवक ससुराल गया था या फिर युवक की मौत के पीछे बड़ी कहानी है। जानकारी के मुताबिक मंझनपुर को कोतवाली क्षेत्र के खेरवा गांव निवासी वसंत लाल उम्र 38 वर्ष पुत्र छोटकू की ससुराल महेवाघाट थाना के अँधावा गांव में है पत्नी से लगातार विवाद चल रहा था और पत्नी मायके में रहती है तीन दिन पहले वह ससुराल गया था वहां क्या बातचीत हुई कोई कुछ बोलने को तैयार नहीं है मंगलवार की सुबह गांव के बाहर सुनसान स्थान में बगीचे में बसंत लाल का शव पेड़ में डोरी के सहारे लटक रहा था पेड़ पर शव लटके होने की जानकारी मिलने के बाद मौके पर ग्रामीणों की भीड़ लग गई मामले की सूचना पुलिस को दी गई मौके पर पुलिस पहुंची तो मालूम चला कि युवक ससुराल आया था पेड़ पर लटक रहा है पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है मृतक की पत्नी ने आत्महत्या किए जाने की तहरीर पुलिस को दी है वहीं मृतक के घर के लोगों ने हत्या किए जाने की आशंका जाहिर की है युवक की मौत के बाद बड़े सवाल खड़े हो गए हैं कि क्या युवक केवल आत्महत्या करने के लिए अपने ससुराल गया था जो बड़ी जांच का विषय है।

अर्का फतेहपुर पावर हाउस से विद्युत सप्लाई एक दिन रहेगी बंद

33 के वी में मरम्मती करण को लेकर 23 अप्रैल को समय 10 से 4 बजे शाम तक विद्युत सप्लाई रहेगी ठप

करारी कौशाम्बी। अर्का फतेहपुर पावर हाउस में 33 के वी सप्लाई ठप कर कार्य किया जाएगा, जोकि विद्युत सप्लाई एक दिन ठप रहेगी अर्का फतेहपुर पावर हाउस के जेई निसार अहमद ने जानकारी देते हुए बताया है कि 23 अप्रैल को समय 10:00 से 4:00 बजे शाम तक विद्युत सप्लाई बंद रहेगी, उपखंड अधिकारी सराय अकिल विनय सिंह ने मीडिया के माध्यम से 6400 उपभोक्ताओं को यह सूचित कर रहे है कि वह समय से अपना आवश्यक कार्य कर लें ताकि उन्हें उपभोक्ताओं को समस्या का सामना न करना पड़े 23 अप्रैल समय 10:00 बजे से 4:00 बजे शाम तक विद्युत सप्लाई ठप होने से जो भी उपभोक्ताओं को समस्या पहुंचेगी उसे समस्या के लिए हमें खेद है और 33 केवी की मरम्मत हो जाने के बाद विद्युत सप्लाई की बार-बार कटौती से उपभोक्ताओं को परेशानी का सामना नहीं करना पड़ेगा।

कीमती सरकारी आराजी 64 नंबर पर लेखपाल ने कराया कब्जा

कौशांबी। मंझनपुर नगर पालिका क्षेत्र वार्ड नंबर 24 संत कबीर नगर ओसा की कीमती सरकारी जमीन पर लेखपाल ने कब्जा कर दिया है जिससे प्रशासनिक व्यवस्था पर सवाल खड़े हो गए हैं लेखपाल राजन सिंह अपने मुंशी अजीत कुमार को भेज कर पैमाइश कराते हैं और धन उगाही करते हैं पूछने पर उल्टा सीधा जवाब मुंशी देता है इसी तरह पूर्व में लेखपाल ने आराजी संख्या 64 में अवैध कब्जा करा दिया जो कि यह जमीन बहुत कीमती है आराजी संख्या 64 में करीब डेढ़ बीघे जमीन गोचर है दो विस्वा सीलिंग की जमीन है लेकिन उस सरकारी जमीन में जाने का रास्ता नहीं है क्या भू माफिया का इतना बोलबाला है इतनी पकड़ मजबूत है कि तहसील के अधिकारी उधर देखते भी नहीं है अगर जांच हो जाए तो हकीकत सामने आ जाए।

न्यूज झरोखा

संदिग्ध परिस्थितियों में लगी आग, 4 बीघा गेहूं की फसल जलकर खाक

अझुवा कौशाम्बी। सिराथू तहसील के अझुवा कस्बे के ससुर खदेरी नदी के पास बीती रात अज्ञात कारणों से खेत में आग लग गई आग बुझाते बुझाते 4 बीघा गेहूं की फसल जलकर खाक हो गई ,स्थानीय लोगो ने कड़ी मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया। आदर्श नगर पंचायत अझुवा निवासी सरपंच पंचम लाल मौर्य ,संतोष कुमार गौतम , अशोक कुमार गौतम का लगभग छः बीघे के करीब ससुर खदेरी नदी के पास खेत है। जिसमें लगभग दो बीघे के करीब सरसों की फसल बोई थी, जो कट गई है। वही बगल के खेत में लगभग चार बीघे के गेहूं की फसल बोई थी ,फसल पक कर तैयार खड़ी थी बीती रात संदिग्ध परिस्थितियों में गेहूं की खडी फसल में आग लग गई। जिससे गेहूं की खडी फसल जलकर खाक हो गई । आसपास मौजूद लोगो ने नजदीकी समर सेबुलों से खेत में लगी आग को कड़ी मशक्कत के बाद दमकल कर्मियों के पहुंचने से पहले काबू पाया। आग लगने की सूचना राजस्व कर्मियों को दी गई है।

पृथ्वी दिवस पर जनपद न्यायालय परिसर में किया गया वृक्षारोपण

कौशाम्बी। उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण से प्राप्त कलेन्डर के अनुसार जनपद न्यायाधीश/ अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, कौशाम्बी अनुपम कुमार के निर्देशन में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, कौशाम्बी की ओर से पृथ्वी दिवस के अवसर पर 22 अप्रैल को जनपद न्यायालय परिसर में समस्त न्यायिक अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं लीगल एड डिफेन्स काउन्सिल के सदस्यगण द्वारा वृक्षारोपण किया गया। जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, कौशाम्बी द्वारा कार्यक्रम में उपस्थित समस्त न्यायिक अधिकारीगण, कर्मचारीगण एवं उपस्थित समस्त लोगों को अधिक से अधिक वृक्षारोपण करने एवं वृक्षो की देखभाल करने हेतु निर्देशित भी किया गया। उक्त कार्यक्रम के उपरान्त सी0डी0ओ0 आवास परिसर में प्रधान न्यायाधीश, परिवार न्यायालय, कौशाम्बी पीठासीन अधिकारी, मोटर दुर्घटना दावा अधिकारी, कौशाम्बी अपर जनपद न्यायाधीश/सचिव, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, कौशाम्बी द्वारा वृक्षारोपण किया गया। यह जानकारी अपर जिला जज/सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण कौशाम्बी पूर्णिमा प्रांजल ने दी है।

हनुमानजी के मंदिर में डीजे बजाने को लेकर हुई मारपीट

कोखराज कौशाम्बी कोखराज क्षेत्र के कशिया हनुमान मंदिर में मंगलवार व शनिवार के दिन हजारों श्रद्धालुओं की भीड़ लगती हैं जिसमें आज दो डीजे से तमाम श्रद्धालुओं ने हनुमानजी को प्रशाद चढ़ाने के लिए गए थे तभी पहले से एक डीजे में गाना बज रहा था तभी दूसरा डीजे भी पहुँच गया और उसमें भी गाना बज रहा था तभी एक डीजे ने आवाज तेज किया फिर दूसरे ने भी तेज कर दिया जिससे दूसरे डीजे वाले ने पुनः आवाज तेज किया यही कम्पटीशन सुरु था जिसको लेकर दोनों तरफ के श्रद्धालुओं के बीच मारपीट सुरु हो गयी जिसकी सूचना ग्रामीणों में डायल 112 को सूचना दी जिस पर मौके से पहुँची 112 पुलिस व कोखराज पुलिस के सूझ बूझ से विवाद रोका गया और दोनों डीजे को बंद करा दिया गया जिसमें डीजे संचालक मौके से भीड का फायदा उठाकर भाग गया कोखराज पुलिस ने तेज ध्वनि करने पर व विवाद कराने के लिए डीजे संचालक को थाने पर बुलवाया गया लेकिन खबर लिखे जाने तक वह नहीं पहुँच सका हैं।

पूर्व विधायक के नाम पर सड़क का नामकरण किए जाने की मांग

भरवारी कौशांबी। भरवारी कस्बे के रहने वाले स्वतंत्रता संग्राम सेनानी वा पूर्व विधायक मंगला प्रसाद तिवारी उर्फ जर्मन मास्टर के द्वारा समाज में किए गए योगदान को नहीं भुलाया जा सकता उनके पुण्यतिथि पर उनके चित्र पर माल्यार्पण कर उन्हें नमन किया गया और उनके योगदान को याद किया गया इस मौके पर कस्तूरबा गांधी बालिका इंटर कॉलेज भरवारी के अध्यक्ष सोहनलाल केसरवानी ने नगर पालिका परिषद भरवारी की अध्यक्ष कविता पासी को पत्र भेजकर भरवारी से चाकवन रोड को या भरवारी से कोखराज रोड को पूर्व विधायक स्वतंत्रता संग्राम सेनानी मंगला प्रसाद तिवारी उर्फ जर्मन मास्टर के नाम सड़क का नामकरण किए जाने की मांग की है पूर्व विधायक की पुण्यतिथि के मौके पर नेशनल इंटर कॉलेज भरवारी में मंगला प्रसाद तिवारी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर प्रबंधक प्रधानाचार्य और शिक्षकों ने उन्हें नमन किया है और उनके योगदान की चर्चा की है बताते जाने की मंगला प्रसाद तिवारी ने अपने कड़ी मेहनत और समाज के सहयोग से नेशनल इंटर कॉलेज भरवारी की स्थापना की है जिसमें हजारों छात्र शिक्षक ग्रहण कर रहे हैं

सीनियर शिक्षक सुधाकर सिंह बने वॉयस-प्रिंसिपल ऑफ भवंस

भरवारी कौशाम्बी। भवंस मेहता विद्याश्रम भरवारी के निदेशक संदीप सक्सेना ने सीनियर खेल शिक्षक सुधाकर सिंह जिन्होंने 19 जुलाई 1993 को भवंस मेहता विद्याश्रम में खेल शिक्षक के रूप में पद ग्रहण किया था उन्हें उप-प्रधानाचार्य पद पर नियुक्त करते हुए बधाई दिया।निदेशक संदीप सक्सेना ने बताया कि भवंस मेहता विद्याश्रम के बहुत से छात्र स्पोर्ट्स में सुधाकर सिंह के बेहतर मार्गदर्शन में राष्ट्रीय स्तर तक पहुंच चुके हैं।निदेशक ने कहा कि कॉलेज को इनके द्वारा दिए गए विशेष योगदान एवं सीनियरिटी को देखते हुए भारतीय विद्या भवन मुंबई की सलाह से भवंस मेहता विद्याश्रम में पहली बार कार्यवाहक उप-प्रधानाचार्य पद पर नियुक्त करते हुए उन्हें अत्यंत हर्ष हो रहा है।इस अवसर पर प्रधानाचार्या श्रीमती जूही श्रीवास्तव एवं समस्त अध्यापकों ने सुधाकर सिंह को बधाई देते हुए खुशी व्यक्त किया।

सिर पर कलश रखकर भव्य कलश यात्रा का आयोजन

बैरम पुर कौशाम्बी। मंझनपुर तहसील के डकशरीरा कुम्हियावां ग्राम में मंगलवार को दिव्य भव्य श्रीमद्भागवत कलश यात्रा का आयोजन भक्त गणों द्वारा किया गया है पवित्र गंगाजल से कलश को भरकर पूजा अर्चना के बाद सिर पर कलश रख कर भक्तगण प्रभु का जयकारा लगाते हुए पूरे गांव क्षेत्र में भ्रमण किया है श्रीमद् भागवत कथा प्रारंभ होने के पूर्व कलश यात्रा में कथावाचक आचार्य देवानन्द मणि महाराज श्री धाम वृन्दावन गुलाब चन्द्र पाण्डेय,गोबिन्द पाण्डेय, सुभाष पाण्डेय ,अनिल पाण्डेय ललित पाण्डेय भोरे पाण्डेय माधव पाण्डेय ,शीतला प्रसाद त्रिपाठी,रुद्र नारायण मिश्र सत्यनारायण चौबे आशीष तिवारी ,मुन्ना द्विवेदी राजेश पाण्डेय सहित गांव के समस्त ग्रामवासी कलश यात्रा में शामिल रहे कलश यात्रा के बाद विधि विधान से पूजन कर श्रीमद् भागवत कथा का आयोजन शुरू हुआ है।

साधना दिवाकर का आईएएस की परीक्षा में हुआ चयन

कोखराज कौशांबी कोखराज थाना क्षेत्र के महमदपुर गांव की साधना दिवाकर का आईएएस की परीक्षा में चयन होने से उनके घर परिवार गांव रिश्तेदारों में खुशी का माहौल है हाई कोर्ट के अधिवक्ता जय जवान जय किसान मंच के संयोजक व पूर्व प्रत्याशी चायल विधानसभा के सुशील जय हिंद ने साधना दिवाकर के आईएएस में चयन होने पर उन्हें बधाई दी है परिवार के लोगों ने कहा कि कड़ी मेहनत से बेटी साधना दिवाकर को सफलता मिली है जिससे पूरा परिवार प्रसन्न है इस प्रसन्नता पर घर परिवार के लोग मिठाई वितरण कर रहे हैं।

यूपीएससी की परीक्षा में साकेत पटेल ने प्राप्त की सफलता

कौशांबी। मंझनपुर तहसील क्षेत्र के कोरीपुर गांव के रहने वाले साकेत सिंह पटेल ने यूपीएससी की परीक्षा में सफलता प्राप्त किया है जिस पर घर परिवार रिश्तेदार और गांव के लोगों में खुशी के माहौल है बधाई देने वालों का ताता लगा हुआ है लोगों ने कहा कि यह उपलब्धि न सिर्फ आपके परिवार के लिए गर्व की बात है बल्कि कौशांबी जनपद का भी मान बढ़ाने वाली है यह संघर्ष समर्पण और अनुशासन युवाओं के लिए प्रेरणा का श्रोत बन गया है।

ओवर ब्रिज बनाने के लिए रेलवे ने भरवारी में शुरू किया नाप जोख मचा हड़कंप

भरवारी कौशांबी नगर पालिका परिषद भरवारी में रेलवे फाटक पर जाम लगना रोज की बात हो गई है जाम की समस्या से आम जनता हलकान होती है नगर के लोगों की मांग पर भरवारी रेलबे फाटक पर ओवर ब्रिज बनाए जाने की चर्चा काफी दिनों से हो रही थी सोमवार को रेलवे के अधिकारियों ने भरवारी नगर में ओवरब्रिज बनाने के लिए जमीन की नाप शुरू कर दी है जिससे नगर में हड़कम्प मच गया है हालांकि अधिकारियों ने बताया कि बहुत जल्द भरवारी नगर में ओवर ब्रिज बनना शुरू हो जाएगा और लोगों को जाम की समस्या से निजात मिल जाएगी बुधवार को भरवारी में लोक निर्माण विभाग के अधिकारी भी ओवर ब्रिज के साथ-साथ सड़क बनाए जाने के लिए नाप करेंगे बताया जाता है कि ओवरब्रिज बनाने में 20 मीटर चौड़ाई की जगह रेलवे और पीडब्ल्यूडी ले रहा है जिससे तमाम मकान भी तोड़े जाएंगे रेलवे ओवर ब्रिज बनाए जाने में मकान तोड़े जाने से कुछ लोगों के चेहरे पर चिंता के भाव दिख रहे हैं लेकिन नगर के अधिकतर लोगों में ओवर ब्रिज बनाए जाने से प्रसन्नता दिखाई पड़ रही है ओवर ब्रिज बनाए जाने के बाद नगर में जाम की समस्या से आम जनता को निजात मिल जाएगा।

नाबालिग को बेचने के आरोप में गिरफ्तार दो आरोपी को लेकर जा रही पुलिस जीप खाई में पलटी, चार घायल

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। मंझनपुर थाना क्षेत्र के सेलरहा पुरब इलाके में पुलिस की जीप खाई में पलट गई है जिससे गिरफ्तार आरोपी समेत पुलिसकर्मी घायल हो गए हैं घायलों को इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जानकारी के मुताबिक नाबालिग को तीन लाख में बेचने के आरोप में पकड़े गए अशोक कुमार और संदीप त्यागी को पुलिस मेडिकल के बाद कोर्ट में पेश करने के लिए लेकर जा रही थी। लेकिन पुलिस की जीप अचानक गड्ढे में पलट गई है हादसे में जीप चला रहे सिपाही हेमंत कुमार, एक पीआरडी जवान और दोनों आरोपी गंभीर रूप से घायल हो गए। मौके पर पहुंची मंझनपुर पुलिस टीम ने सभी घायलों को 108 एम्बुलेंस की मदद से जिला मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया। आपको बता दें कि 17 अप्रैल को 13 साल की एक किशोरी ने कोखराज थाने में तहरीर देकर आरोप लगाया था कि उसके माता-पिता ने उसे पानीपत निवासी संदीप त्यागी को तीन लाख रुपये में बेच दिया था। पीड़िता का कहना है कि आरोपी शराब पीकर उसके साथ दुष्कर्म करता था। होली के मौके पर वह किसी तरह अपनी मौसी के घर आई और वहीं से पुलिस को तहरीर दी।पुलिस पहले ही इस केस में एक आरोपी को जेल भेज चुकी है, और दो आरोपियों को मेडिकल के बाद कोर्ट में पेश करने के लिए ले जाते समय यह हादसा हो गया।

कार की टक्कर से महिला की मौके पर मौत

मूरतगंज नाइट क्वीन गेस्ट हाउस के सामने आधी रात को हुई घटना

अखंड भारत संदेश

हर्रायपुर कौशाम्बी। संदीपनघाट थाना क्षेत्र के मूरतगंज स्थित मेला बाग के सामने नाइट क्वीन गेस्ट हाउस में 21 अप्रैल दिन सोमवार की रात विवाह कार्यक्रम में शामिल होने आई महिला राबिया बेगम उम्र 45 वर्ष पत्नी जानी खां निवासी तुलसीपुर थाना करैली प्रयागराज सड़क के किनारे पटरी पर खडी होकर अपने परिजनो का इन्तजार कर रही थी कि अचानक सैनी की ओर से प्रयागराज की तरफ जा रही चार पहिया कार का चालक ने महिला राबिया बेगम को जोरदार टक्कर मार दिया जिससे महिला सड़क पर चिटक कर गिर गई टक्कर लगने से सर व शरीर मे गम्भीर रूप से चोट लगी और मौके पर मृत्यु हो गई सूचना पर मूरतगंज पुलिस मौके पर पहुंच कर शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिए लेकिन चालक कार छोड़कर फरार है मृतक महिला के पुत्र अशरफ की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज कर जांच पड़ताल शुरू कर दिया है कार पुलिस के कब्जे में है मृतक महिला के परिवार के लोगो का रो रो कर हाल बेहाल है।

बारात का सामान लेकर जा रहा पिकअप पलटा एक की मौत कई घायल

कौशांबी मंझनपुर कोतवाली क्षेत्र के ओसा से बारात का सामान लेकर प्रयागराज जनपद के गाँजा चिल्ला जा रहा एक पिकअप सराय अकिल थाना क्षेत्र के कुंडरावरी के पास संतोष पटेल के मकान में टक्कर मारते हुए घुसकर पलट गया है जिससे मौके पर अफरा तफरी मच गई है दुर्घटना के बाद मौके पर लोगों की भीड़ लग गई मामले की सूचना पुलिस और एंबुलेंस को दी गई है इस दुर्घटना में पिकअप में सवार श्रीनाथ पुत्र दिलावर निवासी कतैनी बसुहार थाना सराय अकिल की मौके पर तड़प तड़प कर दर्दनाक मौत हो गई है दुर्घटना में मकान की महिला सहित कई लोग गंभीर घायल है घायल महिला सहित सभी को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया गया है और मृतक के शव को कब्जे में लेकर पुलिस ने पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है।

तेज रफ्तार कंटेनर हाइवे में पलटा चालक घायल

कोखराज कौशाम्बी कोखराज थाना क्षेत्र के मलाक भायल में एक तेज रफ्तार कंटेनर पलट गया जिसमें रोड के किनारें लगी सर्विस रोड की तार को तोड़ते हुए नाली के ऊपर पलट गया जिसमें चालक कंटेनर में फस गया जिसको ग्रामीणों की मदद से बाहर निकाला गया ग्रामीणों ने कोखराज पुलिस को सूचना दी जिस पर कोखराज पुलिस मौके पर पहुँच कर गम्भीर घायल को नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया गया हैं कंटेनर कानपुर की तरफ से प्रयाग राज जा रहा था।

सर्प दंश से महिला की मौत, परिजनो में शोक

हर्रायपुर कौशाम्बी। संदीपन घाट थाना क्षेत्र अंतर्गत बलिहवा देह गांव में सोमवार की शाम गेहूं की पड़ी फसल को एकत्रित करने के दौरान जहरीले सर्प ने एक महिला को काट लिया जिसकी जनकारी होने पर आननफानन इलाज के लिए लेकर परिजन भागे रास्ते में ही महिला ने दम तोड़ दिया। मौत के बाद महिला के परिजनों में शोक की लहर दौड़ गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। जानकारी के अनुसार संदीपन घाट थाना अंतर्गत बलिहवा देह गांव निवासिनी 55 वर्षीय राजकली पत्नी रामसजीवन सोमवार की शाम अपने खेत में गेंहू की कटी हुई फसल को उठा रही थी तभी फसल के नीचे जहरीले सांप ने राजकली को डंस लिया। सर्प दंश के बाद महिला चीखने चिल्लाने लगी, चीख पुकार सुनकर आसपास के लोग दौड़ कर पहुंचे और महिला के परिजनों भी पहुंच गए और उसे तत्काल इलाज के लिए लेकर भागे लेकिन इलाज के लिए लेकर जाते वक्त राजकली ने रास्ते में ही दम दिया जिसके बाद घटना की सूचना परिजनो ने संदीपन घाट थाना पुलिस को दी। सूचना मिलते ही थाना प्रभारी विजेंद्र सिंह व उप निरीक्षक अनुराग सिंह घटना स्थल पर पहुंच गए और शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेजवा दिया। राजकली की मौत से उसके घर में मातम छा गया है। परिजनो का रो रो कर बुरा हाल है।

शैक्षणिक व्यवस्था को और भी चुस्तदुरुस्त करने में मदद करेगा सीबीएसई के 5 प्रधानाचार्यों का विशेष पैनल

भरवारी कौशाम्बी भवंस मेहता विद्याश्रम के निदेशक संदीप सक्सेना ने 22 अप्रैल को ऑफिशियल व्यवस्था को और भी चुस्त दुरुस्त तथा डिजिटल तरीके से चलाने हेतु हेड ऑफिस मुंबई के मार्गदर्शन में सर्वज्ञ तिवारी को उनके दायित्वों तथा समस्त बारीकियों को समझाते हुए प्रधानाचार्या तथा सीनियर शिक्षकों व अन्य कर्मचारियों की उपस्थिति में 'अकाउंट ऑफिसर' पद का कार्यभार ग्रहण कराया।तत्पश्चात निदेशक ने प्रधानाचार्या श्रीमती जूही श्रीवास्तव तथा समस्त अध्यापकों एवं अन्य कर्मचारियों की उपस्थिति में मीटिंग लेते हुए अवगत कराया कि आगामी सत्र के लिए भवंस मेहता विद्याश्रम की शैक्षणिक स्तर को जिले एवं प्रदेश स्तर तक पहुंचाने के उद्देश्य से समस्त तदर्थ शिक्षकों को 5 सीबीएसई कॉलेजों के प्रधानाचार्यों के एक विशेष पैनल की निगरानी में इंटरव्यू लेते हुए भवंस मेहता के हेड ऑफिस मुंबई द्वारा बनाए गए नए मानक के हिसाब से शिक्षकों को नियुक्त किया जाएगा जो आगामी शैक्षणिक सत्र को मजबूती प्रदान करने में मील का पत्थर साबित होगा।उन्होंने यह भी अवगत कराया कि समस्त तदर्थ शिक्षक जो कई सालों से स्कूल में कार्यरत हैं उनके पिछले 3 सालों में दिए गए रिजल्ट,स्कूल में उनके द्वारा दिए गए विशेष योगदान तथा इंग्लिश कम्युनिकेशन ही उनके सिलेक्शन का मुख्य आधार होगा जिसके लिए 12 मई को प्रयागराज स्थित कॉलेज में इंटरव्यू कराया जाएगा।निदेशक ने नवनियुक्त प्रधानाचार्या श्रीमती जूही श्रीवास्तव के वर्तमान में किए गए शैक्षणिक बदलाव तथा बेहतर अनुशासन की सराहना किया।इस अवसर पर समस्त शिक्षक एवं अन्य कर्मचारी मौजूद रहे।

बाल बाल बचा लीकेज ठीक करने गया नगर पंचायत कर्मी

अखंड भारत संदेश

अझुवा कौशाम्बी। आदर्श नगर पंचायत अझुवा के वार्ड नं 3 में लीकेज पाइप को ठीक करने गया, नगर पंचायत कर्मी मलबे में दबकर जख्मी हो गया चेयरमैन प्रतिनिधि द्वारा घायल को एम्बुलेंस की मदद से इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया। जानकारी के अनुसार सैनी कोतवाली के गरई निवासी अनिल कुमार पुत्र श्रीपाल नगर पंचायत अझुवा में आउट सोर्सिंग पर कर्मचारी है। बताया जाता है कि नगर पंचायत के वार्ड नं तीन शांति नगर मोहल्ले के बरगद के पास अनिल कुमार चक के घर के सामने काफी दिनों से पाइप लीकेज था, पानी अंदर अंदर उसके घर के नीव में जाता था। जिससे घर में दरार आ गई थी । जिसकी शिकायत अनिल चक की मां ने नगर पंचायत में की थी । मंगलवार सुबह नगर पंचायत मिस्त्री बाबूलाल ,केशपाल व अनिल कुमार लीकेज बनाने गए थे जहां अनिल चक के घर के पास फावड़ा कुदाल से गड्ढा किया ,बगल में नाले की सीलन से मलबा भरभराकर अनिल के ऊपर गिर गया जिससे अनिल कमर तक मलबे में धंस गया चीख पुकार मचाने पर मुहल्ले के सैकड़ों लोगों का मजमा लग गया मौके पर पहुंचे चेयमैन प्रतिनिधि ओमप्रकाश कुशवाहा के आदेश पर नगर की जेसीबी की मदद से गड्ढे के नजदीक आठ फुट गड्ढा खोदने के बाद अनिल कुमार को गड्ढे से निकाला गया प्रत्यक्षदर्शियों की माने तो अनिल के गढ्ढे में उतरते ही मलबा भरभरा कर अनिल के ऊपर गिर गया। जिसमे वह दबकर जख्मी हो गया । मौजूद लोगो ने देखा तो चेयर मैन प्रतिनिधि ओमप्रकाश की कोशिश से आनन फानन में आधा घंटा मशक्कत के बाद जेसीबी की मदद से अनिल कुमार को मलबे से बाहर निकाला और इलाज के लिए अझुवा के निजी अस्पताल ले गए। जहां चिकित्सकों ने रेफर कर दिया जिसके बाद जख्मी अनिल कुमार को इलाज के लिएचेयरमैन प्रतिनिधि ओम प्रकाश कुशवाहा ने एंबुलेंस की मदद से सिराथू के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया।

छात्रों ने पर्यावरण सम्बन्धी समस्या और उनके निवारण पर मॉडल बना कर किया प्रस्तुत

कौशाम्बी। करारी कस्बा स्थित डॉ० रिजवी स्प्रिंगफील्ड स्कूल में मंगलवार को विश्व पृथ्वी दिवस मनाया गया। जिस अवसर पर छात्रों ने मॉडल और प्रोजेक्ट के माध्यम से प्रदूषण, जंगल की कटाई आदि सम्बन्धित मुद्दों पर चर्चा की और विश्व को धरा को बचाने के अन्य तरीके स्लोगन के माध्यम से बताए। इसमे बाद विद्यालय के प्रधानाचार्य ने बच्चों को कम से कम एक वृक्ष लगाने का निर्देश दिया। विद्यालय के कक्षा नौवीं से बारहवीं तक के बच्चों ने पीपीटी के माध्यम से पर्यावरण से सम्बंधित समस्या और उनके निवारण संबंधी अपने विचार प्रस्तुत किये। इसके बाद कक्षा छटवीं से आठवीं तक के छात्रों ने प्रोजेक्ट के माध्यम से प्रदूषण एक गम्भीर समस्या और उसके निवारण हेतू आने विचार प्रस्तुत किये इसके बाद विद्यालय के प्रधानाचार्य धर्मेन्द्र पाण्डेय ने छात्र छात्राओं को पृथ्वी को प्रदूषण से बचने के लिए 11 सूत्रीय तरीके बताए उन्होंने बताया कि प्रतिबंधित प्लास्टिक और पॉलिथीन का इस्तेमाल न करें, परिवार में खुशियों के हर मौके पर कम से कम एक पौधा अवश्य लगाएं, घर और बाथरूम की सफाई में एसिड का इस्तेमाल न करें बल्कि बायो क्लीनर का इस्तेमाल करें। अपनी गाड़ियों की समय से मरम्मत कराएं ताकि कार्बन उत्सर्जन कम हो, प्रदूषण जांच नियमित कराएं। डीजी जेनसेट के बजाए बिजली के लिए सोलर ऊर्जा स्टोरेज को प्राथमिकता प्रदान करें। बाग बगीचे में गिरी पत्तियों और घर से निकले कचरे को आग न लगाए बल्कि उससे हरित खाद बनाएं। घर में टपकने वाले प्रत्येक नल को ठीक कराएं। बिना वजह पीने वाले पानी को बर्बाद न करें। घर में आरओ प्लांट से निकलने वाले पानी को एकत्र कर उसे दूसरे कार्यो में इस्तेमाल करें। बारिश के जल को संरक्षित करने का प्रयास करें,उसका इस्तेमाल करें, अन्यथा भूमिगत रिचार्ज बढ़ाए। फसलों में खरपतवार प्रबंधन और कीट प्रबंधन में जैविक कीटनाशक का इस्तेमाल करें। संकल्प ले कि प्रकृति को क्षति पहुंचाने वाली कोई भी गतिविधि नहीं करेंगे। इसके बाद सभी छात्र छात्राओं को एक पेड़ लगाने का निर्देश दिया। इस मौके पर मो० आरिफ, बिन्ते जहरा महफूज आलम, मो० साजिद आदि अध्यापक सहित छात्र छात्राएँ मौजूद रहे।

सम्पादकीय

राहुल ने खोली चुनाव आयोग की पोल

लोकसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी जब भी विदेश दौरों पर जाते हैं, भारतीय जनता पार्टी और उसकी सरकार की जान सांसत में होती है। राहुल गांधी इस समय नेता प्रतिपक्ष हैं ही, उन्हें एक बड़े नेता के तौर पर भी देखा जाता है। देश में तो राहुल गांधी भाजपा एवं उसकी एनडीए सरकार के खिलाफ संसद के भीतर-बाहर अभियान छेड़े हुए हैं ही, विदेशों में भी प्रवासी भारतीयों, छात्रों, बुद्धिजीवियों, पत्रकारों से वे लोकतंत्र के लिए अपनी चिंताओं को साझा करते हैं। राहुल अभी अमेरिका प्रवास पर हैं। वहां उन्होंने अपनी पहली सभा में भारत के केन्द्रीय निर्वाचन आयोग की कार्यपद्धति की जमकर आलोचना की। किस तरह से पूरी निर्वाचन पद्धति सत्तारुढ़ भाजपा के पक्ष में काम करती है, उन्होंने इसका लेखा-जोखा सामने रखा है।

अमेरिका के बोस्टन शहर पहुंचे राहुल ने व्यवसायियों और वहां रहने वाले भारतीयों से बातचीत में भारत के चुनाव आयोग पर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि 'हमारे सामने यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया है कि चुनाव आयोग ने समझौता कर लिया है और निर्वाचन प्रणाली में व्यापक गड़बड़ियां हैं।' राहुल गांधी ने कहा- 'मैंने यह कई बार बताया है, खासकर महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव में प्रदेश के वयस्क नागरिकों की संख्या से कहीं अधिक लोगों ने वोटिंग की। चुनाव आयोग द्वारा शाम 5.30 बजे तक मतदान के आंकड़े जारी किये गये थे। बाद में जो अंतिम आंकड़े प्रदान किये गये उसके अनुसार शाम 5.30 बजे से 7.30 बजे के बीच 65 लाख लोगों ने मतदान किया। ऐसा होना संभव ही नहीं है क्योंकि एक व्यक्ति को मतदान करने में लगभग 3 मिनट लगते हैं। इस हिसाब से तो सुबह 2 बजे तक मतदाताओं की कतारें लगनी चाहिये थीं, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। जब कांग्रेस व विपक्ष ने आयोग से वीडियो सबूत मांगे तो उसे न केवल मना कर दिया गया बल्कि आयोग ने कानून ही बदल दिया ताकि विपक्षी दल वीडियोग्राफी के लिए न कह सकें।' गौरतलब है कि राहुल ने अपनी अमेरिका यात्रा के दौरान ऐसे वक्त में चुनावी गड़बड़ियों की ओर इशारा किया है जब कुछ ही दिनों पहले राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प और उनके खासमखास दुनिया के सबसे अमीर कारोबारी एलन मस्क ने साफ किया है कि इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन से निष्पक्ष चुनाव नहीं हो सकते। बैलेट पेपर की हिमायत करते हुए मस्क ने तो यहां तक कहा है कि ईवीएम को हैक किया जा सकता है। यानी वे उस आरोप की पुष्टि कर रहे हैं जो भारत के कई विपक्षी दल 2022 से लगा रहे हैं। आरोप हैं कि पिछले साल हुए लोकसभा चुनाव में वोटिंग मशीनों में बड़े पैमाने पर धांधली कर भाजपा ने दो-चार नहीं वरन लगभग 80 सीटें जीती हैं। इतना ही नहीं, कई राज्यों के विधानसभा चुनावों में भी एक खास पैटर्न के द्वारा हारती हुई भाजपा ने चंद घंटों में इतनी सीटें जीत लीं कि वह सरकार बनाने में कामयाब हो गयी। राजस्थान, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र समेत कई राज्यों के उदाहरण इस सिलसिले में दिये जाते हैं। वैसे तो भारत में जिस तरह से शासकीय मशीनरी के जरिये लोकतंत्र को अपहृत किया गया है ।

हिन्दी विरोध की संकीर्ण राजनीति के दंश

-ललित गर्ग-

हिंदी को लेकर तमिलनाडु की राजनीति का आक्रामक होना कोई नयी बात नहीं है लेकिन तमिलनाडु के बाद महाराष्ट्र में हिंदी का विरोध यही बताता है कि संकीर्ण राजनीतिक कारणों से किस तरह भाषा को हथियार बनाया जा रहा है। विभिन्न राजनीतिक दल भारतीय जनता पार्टी एवं केन्द्र सरकार को घेरने के लिये जिस तरह भाषा, धर्म एवं जातियता को लेकर आक्रामक रवैया अपनाते हुए देश में अशांति, अराजकता एवं नफरत को फैला रहे रहे हैं, यह चिन्ताजनक है। महाराष्ट्र में हिन्दी का विरोध आश्चर्यकारी है। हिन्दी दुनिया का तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बनने की ओर अग्रसर है। हिन्दी विदेशों में सम्मान पा रहे हैं और अपने ही देश में उपेक्षा एवं विवाद का शिकार बन रही है। महाराष्ट्र और अन्य गैर हिंदी भाषी राज्यों में हिंदी की स्वीकार्यता इसलिए बढ़ रही है, क्योंकि उसकी उपयोगिता सिद्ध हो रही है। हिंदी का मराठी या अन्य किसी भाषा से कोई झगड़ा नहीं। क्या यह विचित्र नहीं कि हिंदी का विरोध उस महाराष्ट्र में हो रहा है, जिसकी राजधानी हिंदी फिल्म उद्योग का गढ़ है? हिंदी फिल्म उद्योग ने मुंबई को न केवल प्रतिष्ठित किया है, बल्कि महाराष्ट्र के लोगों को लाभान्वित भी किया है। क्या राज ठाकरे, उद्धव ठाकरे आदि हिंदी फिल्म उद्योग का भी विरोध करेंगे? ऐसा करके वे अपने राज्य के लोगों के पैरों पर कुल्हाड़ी मारने का ही काम करेंगे। यह किसी से छिपा नहीं कि हिंदी विरोध के नाम पर लोगों की भावनाएं भड़काने का काम अपना राजनीतिक उल्लू सीधा करने के लिए किया जाता है। यह और कुछ नहीं, राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को कमजोर करने और लोगों में वैमनस्य पैदा करने वाली क्षुद्र राजनीति है।

त्रिभाषा फामूर्ले में केन्द्र सरकार चाहती है कि भारत में प्रत्येक छात्र को तीन भाषाएँ सीखनी चाहिए, जिनमें से दो मूल भारतीय भाषाएँ होनी चाहिए, जिसमें एक क्षेत्रीय भाषा शामिल होनी चाहिए और तीसरी अंग्रेजी होनी चाहिए। यह सूत्र सरकारी और निजी दोनों स्कूलों पर लागू होता है और शिक्षा का माध्यम तीनों भाषाओं में से कोई भी हो सकता है। नेशनल एजुकेशन पॉलिसी के त्रिभाषा फामूर्ले के तहत मराठी और अंग्रेजी के साथ हिंदी को पढ़ाए जाने के महाराष्ट्र सरकार के निर्णय पर विपक्षी दलों की राजनीतिक आक्रामकता का कारण वोट की राजनीति एवं भाजपा के बढ़ते वर्चस्व को विराम लगाने की स्वार्थी मानसिकता है। त्रिभाषा फामूर्ले पर सबसे पहले महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना के राज ठाकरे ने आपत्ति उठाई। यह वही राज ठाकरे हैं, जो हिन्दुत्व का झंडा हाथ में लेकर स्व-संस्कृति की वकालत करते रहे हैं। इस पर हैरानी नहीं कि उद्धव ठाकरे भी राज ठाकरे के सुर में सुर मिला रहे हैं। उनकी शिवसेना ने एक समय दक्षिण भारतीयों को मुंबई से भगाने का अभियान छेड़ा था, फिर उसके निशाने पर उत्तर भारतीय आ गए थे। हैरानी इस बात की है कि शरद पवार की राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के नेता भी त्रिभाषा फामूर्ले के तहत हिंदी पढ़ाए जाने का विरोध कर रहे हैं और इसके पीछे साजिश देख रहे हैं। अच्छा होता कि मराठी अस्मिता की रक्षा के बहाने हिंदी को निशाने पर ले रहे ये नेता यह बताते कि तीसरी भाषा के रूप में हिंदी का विरोध करने के क्या कारण है? केवल मोदी सरकार ने इसे प्रस्तुत किया है, इस कारण इसका विरोध मानसिक दिवालियापन का द्योतक है।

तीसरी भाषा के रूप में हिंदी का चयन इसलिए सर्वथा उपयुक्त है, क्योंकि एक तो वह आधिकारिक राजभाषा एवं सबसे प्रभावी संपर्क भाषा है और दूसरे, महाराष्ट्र में बड़ी संख्या में हिंदी बोलने-समझने वाले हैं। ये वे लोग हैं, जो काम-धंधे के सिलसिले में महाराष्ट्र गए और फिर वहीं बस गए। इन्होंने महाराष्ट्र के विकास में योगदान भी दिया है। इसकी अनदेखी करते हुए हिंदी का विरोध करना एक तरह का नस्लवाद ही है, एक तरह की संकीर्ण एवं स्वार्थी मानसिकता है। संचार और सूचना क्रांति तथा तेज आवागमन के चलते भाषायी स्तर पर तमिलनाडु एवं महाराष्ट्र आदि गैर हिन्दी भाषी राज्यों की स्थिति तीन-चार दशक पहले जैसी नहीं है। वहां हिंदी बोलने वालों की संख्या भले कम हो, पर उसे समझने और हिंदी में आने वाले सवालों का जवाब देने वालों की तादाद बढ़ी है। चाहे तमिलनाडु का निवासी हो या फिर महाराष्ट्र या फिर गैर हिन्दी भाषी राज्य का, उसके हाथ में यदि फोन है, उसमें इंटरनेट का कनेक्शन है, तो तय है कि उसकी अंगुलियों के नियंत्रण में हिंदी और अंग्रेजी ही नहीं, दुनियाभर की भाषाएं हैं, इसलिए हिंदी ही नहीं, किसी भी भाषा का विरोध अब दुनिया के किसी भी कोने में पूरी तरह न तो सफल हो सकता है और न ही कोई दीवार उसे रोक सकती है। फिर हिन्दी तो हिन्दुस्तान की अस्मिता एवं अस्तित्व से जुड़ी भाषा है। दुनिया में जहां कहीं भी लोग अन्यत्र जाकर बसते हैं, वे अपने साथ अपनी संस्कृति और भाषा भी ले जाते हैं। यदि कोई यह चाहता है कि ऐसा न हो तो ऐसा होने वाला नहीं है। महाराष्ट्र के विपक्षी दल इसका विरोध कर रहे हैं, तमिलनाडू में इसके रोकने के प्रयास हो रहे हैं, वहीं आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन चंद्रबाबू नायडू ने एक अलग नजरिया दिया। उन्होंने हिंदी सहित कई भाषाओं की शिक्षा की वकालत की है। नायडू ने कहा कि भाषा केवल संचार का एक साधन है। आप सभी जानते हैं कि तेलुगु, कन्नड़, तमिल और अन्य भाषाएं विश्व स्तर पर चमक रही हैं। नॉलेज अलग है, भाषा अलग है। हिंदी भी देश में कम्युनिकेशन लैंग्वेज के तौर पर जरूरी है।

हिन्दी हमारी मातृभाषा के साथ-साथ राजभाषा होने के बावजूद उसको उचित सम्मान न मिलना या हिन्दी के नाम पर विध्वसंक राजनीति होना अनेक प्रश्नों को खड़ा करती है, सर्वाधिक वैज्ञानिक भाषा भी हिन्दी ही है। गूगल के अनुसार हिन्दी दुनिया की ऐसी भाषा है जिसमें सर्वाधिक कंटेंट (पाठ्य सामग्री) का निर्माण होता है। सर आइजेक पिटमैन ने कहा है कि संसार में यदि कोई सर्वांग पूर्ण लिपि है तो वह देवनागरी है। निश्चित ही सशक्त भारत-विकसित भारत निर्माण एवं प्रभावी शिक्षा के लिए हिन्दी में शिक्षा की सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका है। तथ्य यह भी है कि उत्तर भारत के अलावा देश के अन्य राज्यों से जो राजनेता प्रधानमंत्री बने, उन्होंने कभी हिंदी का विरोध नहीं किया। दक्षिण भारत से पहले प्रधानमंत्री बने पी वी नरसिंह राव धाराप्रवाह हिंदी बोलते थे। कर्नाटक के नेता एच.डी. देवेगौड़ा जब पीएम बने तो उन्होंने लालकिले से हिंदी में ही अपना भाषण दिया था। हिन्दी राष्ट्रीयता एवं राष्ट्र का प्रतीक है, उसकी उपेक्षा एक ऐसा प्रदूषण है, एक ऐसा अंधेरा है जिससे छांटने के लिये ईमानदार प्रयत्न करने होंगे। क्योंकि हिन्दी ही भारत को सामाजिक-राजनीतिक-भौगोलिक और भाषायिक दृष्टि से जोड़नेवाली भाषा है। हिंदी को दबाने की नहीं, ऊपर उठाने की आवश्यकता है। भारत की गरिमा एवं गौरव की प्रतीक राष्ट्र भाषा हिन्दी को हर कीमत पर विकसित करना हमारी प्राथमिकता होनी ही चाहिए। आजादी के अमृतकाल तक पहुंचने के बावजूद हिन्दी को उसका उचित स्थान न मिलना विडम्बना एवं दुर्भाग्यपूर्ण है। विश्व में हिन्दी की प्रतिष्ठा एवं प्रयोग दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है, लेकिन देश में उसकी उपेक्षा एवं राजनीतिक विरोध एक बड़ा प्रश्न है। राजनीति की दूषित एवं संकीर्ण-स्वार्थी सोच का परिणाम है कि हिन्दी को जो सम्मान मिलना चाहिए, वह स्थान एवं सम्मान राष्ट्र में हिन्दी को नहीं मिल रहा है। भारत सहित दुनिया के अनेक देशों में विश्व हिन्दी दिवस मनाया जाने लगा क्योंकि भारत और अन्य देशों में 120 करोड़ से अधिक लोग हिन्दी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। पाकिस्तान की तो अधिकांश आबादी हिंदी बोलती व समझती है। बांग्लादेश, नेपाल, भूटान, तिब्बत, म्यांमार, अफगानिस्तान में भी लाखों लोग हिंदी बोलते और समझते हैं। फिजी, सुरिनाम, गुयाना, त्रिनिदाद जैसे देश तो हिंदी भाषियों द्वारा ही बसाए गये हैं।

अब सुप्रीम कोर्ट को धौंस !

- राजेंद्र शर्मा

दुबे ने एकवचन में गृहयुद्ध की नहीं, बहुवचन में "गृहयुद्धों" की बात कही है। उसका इशारा सुप्रीम कोर्ट के हाल के कुछ और महत्वपूर्ण फैसलों की ओर भी है। इशारा खासतौर पर राज्यपालों की भूमिका और विशेष रूप से राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों के संदर्भ में राज्यपालों की भूमिका को लेकर, तमिलनाडु बनाम राज्यपाल के मामले में सुप्रीम कोर्ट के हाल के ही फैसले की ओर है।

फासीवादियों की एक जाने-मानी रणनीति है। जो खुद करना चाहते हो, करने जा रहे हो, विरोधी पर वही करने का आरोप लगा दो। भाजपा के बदजुबान पर मोदी जी निजाम के मुंहलगे सांसद, निशिकांत दुबे सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायाधीश, संजीव खन्ना पर "देश में हो रहे सभी गृह युद्धों" की जिम्मेदारी डालने के जरिए, ठीक यही दांव आजमा रहे थे। कहने की जरूरत नहीं है कि दुबे का उक्त बयान, वक्फ कानून की वैधता के लिए चुनौतियों की सुनवाई के क्रम में संजीव खन्ना के नेतृत्व वाले सुप्रीम कोर्ट के तीन सदस्यीय खंडपीठ द्वारा अपनाए गए आरंभिक रुख के संदर्भ में आया है। सुप्रीम कोर्ट ने इस मामले में क्या कहा है और क्या किया है, इसकी चर्चा हम जरा आगे चलकर करेंगे। यहां सिर्फ इतना कि अगर भाजपा के अघोषित प्रवक्ता के रूप में दुबे को, इस संदर्भ में गृहयुद्धों की याद आ गयी है, तो यह संयोग ही नहीं है। इसमें वक्फ कानून को लाने के पीछे संघ-भाजपा निजाम के असली मकसद का इशारा है। और यह मकसद है, मुसलमानों की स्थिति को और कमजोर करना, उन्हें और दबाना, जिसके संबंध में वे भी बखूबी जानते हैं कि यह देश को गृहयुद्ध की ओर धकेलना है। लेकिन, किसी कमजोर, अल्पसंक्रयक को दबाने वाला गृहयुद्ध ही उनका वाक्य है न कि गृहयुद्ध से बचाव।

याद रहे कि दुबे ने एकवचन में गृहयुद्ध की नहीं, बहुवचन में "गृहयुद्धों" की बात कही है। उसका इशारा सुप्रीम कोर्ट के हाल के कुछ और महत्वपूर्ण फैसलों की ओर भी है। इशारा खासतौर पर राज्यपालों की भूमिका और विशेष रूप से राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित विधेयकों के संदर्भ में राज्यपालों की भूमिका को लेकर, तमिलनाडु बनाम राज्यपाल के मामले में सुप्रीम कोर्ट के हाल के ही फैसले की ओर है। उस निर्णय से जुड़ा गृहयुद्ध का इशारा, आम तौर पर राज्यों की स्वायत्तता के खिलाफ और खासतौर पर दक्षिण भारतीय राज्यों की भाषायी-सांस्कृतिक-सामाजिक स्वायत्तता के खिलाफ, संघ-भाजपा की एकात्मकतावादी मुहिम में निहित गृहयुद्ध की संभावनाओं की ओर है।इस प्रसंग में इसकी याद दिलाना अप्रासांगिक नहीं होगा कि तमिलनाडु की "हिंदी थोपे जाने" की चिंताओं का आधे-

अधूरे तरीके से सरकार की ओर से खंडन किए जाने के बीच ही, महाराष्ट्र की भाजपा-नीत गठजोड़ सरकार ने तमिलनाडु की आशंकाओं को ही सच साबित करते हुए, इसका ऐलान कर दिया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के तहत, त्रिभाषा फामूर्ले की तीसरी भाषा के रूप में महाराष्ट्र में "हिंदी" अनिवार्य की जा रही है। हैरानी की बात नहीं है कि इस निर्णय का व्यापक रूप से विरोध भी हो रहा है। बहरहाल, इसके सामानांतर मुंबई के कुछ हिस्सों से एक बार फिर गुजरातियों और मराठियों के बीच तनाव बढ़ने की खबरें आने लगी हैं।

यह भी याद रहे कि तमिलनाडु बनाम राज्यपाल प्रकरण में सुप्रीम कोर्ट के फैसले के खिलाफ हमले की शुरूआत, निशिकांत दुबे से दो-तीन दिन पहले,भारत के उप-राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ कर चुके थे। धनखड़ जो सर्वोच्च न्यायालय के तथाकथित "अतिक्रमणों" से संसद की और वास्तव में कार्यपालिका की हिफाजत करने के नाम पर पहले भी कई बार तलवार भांज चुके हैं, इस बार सर्वोच्च न्यायालय से इस बात से खफा थे कि उसने राज्यपालों द्वारा और यहां तक कि राष्ट्रपति द्वारा भी, राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित किए गए विधेयकों पर मंजूरी या नामंजूरी का निर्णय करने के लिए, तीन महीने की अधिकतम सीमा तय कर दी है। उनके अनुसार यह राष्ट्रपति की और उसकी नियुक्तियों के रूप में राज्यपालों की भी 'सर्वोच्चता' का अतिक्रमण है! अदालत राष्ट्रपति को कुछ भी निर्देश कैसे दे सकती है, भले ही यह इसी का निर्देश क्यों न हो कि राज्य विधायिका द्वारा पारित विधेयकों पर बैठे ही नहीं रहें, तीन महीने के अंदर उन पर अपना कोई न कोई फैसला दे दें! सर्वोच्च न्यायालय को "पूर्ण न्याय" करने में समर्थ बनाने वाली संविधान की धारा-142 को तो उपराष्ट्रपति धनखड़ ने "जनतांत्रिक ताकतों के खिलाफ नाभिकीय मिसाइल, जो न्यायपालिका को 24 घंटा 7 दिन उपलब्ध है" ही करार दे दिया। यह इसके बावजूद था कि बाबरी मस्जिद बनाम रामजन्म भूमि विवाद में, मंदिर के पक्ष में अपने फैसले में सुप्रीम कोर्ट ने कथित रूप से "पूर्ण न्याय" करने के लिए ठीक इसी धारा का सहारा लिया था।

फिर भी यह अकारण ही नहीं है कि धनखड़ से भिन्न, निशिकांत दुबे तथा दिनेश शर्मा जैसे भाजपायी सांसदों ने, आम तौर पर सर्वोच्च न्यायालय पर और खासतौर पर मुख्य न्यायाधीश पर निशाना साधते हुए, वक्फ बोर्ड के मुद्दे को ही सबसे आगे रखा है। इसका सीधा संबंध, वक्फ कानून में संशोधनों के हिंदुत्ववादी सांप्रदायिक मंतव्यों से है। बेशक, संघ-भाजपा की ओर से इसका काफी स्वांग भी किया जाता रहा है और जाहिर है कि इसमें संसद में बहस के दौरान तथा उसके बाद के भी उनके जुबानी दावे भी शामिल हैं, कि ये संशोधन वास्तव में मुसलमानों को लाभ पहुंचाने की चिंता से किए जा रहे हैं। कि इन संशोधनों से विशेष रूप से मुस्लिम महिलाओं व पसमांदा मुसलमानों को और मुसलमानों के बोहरा आदि कमजोर पंथों को फायदा मिलने वाला है। कि इसका हिंदुओं के तुष्टिकरण से कोई संबंध नहीं है, आदि। इसके बावजूद, इस पूरे प्रोजेक्ट के पीछे की असली नीयत तब खुलकर सामने आ गयी जब रातों-रात संघ-भाजपा के युवा संगठनों ने विभिन्न राज्यों को ऐसे पोस्टरों से पाट दिया, जो वक्फ संशोधन विधेयकों का विरोध करने वाली राजनीतिक पार्टियों को, हिंदू-विरोधी घोषित करते थे। यह इसका खुला ऐलान था कि यह कानून, सबसे बढ़कर हिंदू सांप्रदायिकता के आग्रहों से ही संचालित है।

एक प्रकार से देखा जाए तो सुप्रीम कोर्ट ने इस वक्फ अधिनियम के खिलाफ चुनौतियों की सुनवाई पर अपनी शुरूआती प्रतिक्रिया में बिना कहे इस सच्चाई को स्वीकार भी किया है। इसीलिए, सर्वोच्च न्यायालय ने इस अधिनियम के कम से कम तीन पहलुओं पर फौरी तौर पर रोक लगाने की जो मंशा जतायी थी, उसके बाद मोदी सरकार ने अपनी ओर से ही संबंधित पहलुओं का परिचालन अगले अदालती आदेश तक रोके रखने का आश्वासन दे दिया। अदालत ने इस आश्वासन को आधिकारिक रूप से दर्ज कर लिया और इस तरह वक्फ अधिनियम के अमल को ही अदालत द्वारा रोके जाने की शर्मिंदगी से तो सरकार बच गयी, लेकिन इन कदमों को अपनी ओर से ही रोके रखने का वादा करने के बाद ही।

इस तरह जिन दो सबसे समस्यापूर्ण पहलुओं का अमल रोक दिया गया, उनमें एक तो वक्फ बोर्ड तथा वक्फ काउंसिल का राज्यों के स्तर तक पुनर्गठन ही है। इस सिलसिले में विवाद तथा अदालती चुनौती के केंद्र में अधिनियम का यह प्रावधान है कि अब तक के कायदे के विपरीत, उक्त निकायों में गैर-मुसलमानों को भी रखा जा सकता है। शिकायत यह है कि नये प्रावधानों के तहत बोर्ड और काउंसिल में गैर-मुस्लिमों का बहुमत तक हो सकता है। इस संदर्भ में इस कानून का विरोध करने वालों का तर्क यह है कि यह तो अपनी धार्मिक संस्थाओं का स्वतः रूप से संचालन करने की, देश के संविधान में सभी समुदायों को दी गयी स्वतंत्रता का ही उल्लंघन है। इसके अलावा इस प्रबल तर्क का भी सरकार के पास कोई जवाब नहीं था कि क्या वह अन्य धर्मों पर व संप्रदायों की संस्थाओं में भी इसी प्रकार, अन्य धर्मावलंबियों को जगह देने जा रही है?

फिलहाल स्थगित कर दिया गया दूसरा ऐसा ही समस्यापूर्ण पहलू "वक्फ बाई यूज" यानी वक्फ के रूप में उपयोग होते आने से किसी संपत्ति की वक्फ के रूप में मान्यता का है। नया कानून वक्फ बाई यूज को अमान्य करता है और इस प्रकार सैकड़ों साल पुरानी अनेक मस्जिदों, कब्रिस्तानों, खानकाहों आदि पर संपत्ति विवादों का रास्ता खोलता है। मुद्दा यह है कि वर्तमान संपत्ति रजिस्ट्रेशन कानूनों के अमल में आने से पहले से वक्फ के रूप में चली आ रही संपत्तियों के मामले में, रजिस्ट्रेशन आदि के कागजात कहां से आएंगे और किस के पास मिलेंगे? इस तरह नये कानून के बनते ही, अनेक पुरानी संपत्तियों पर विवाद खड़े हो जाने का रास्ता रोक दिया गया है।

बेशक, नये कानून को चुनौती दिए जाने के प्रमुख मुद्दे और भी हैं, जिन पर फिलहाल पाबंदी लगाना जरूरी नहीं समझा गया है। इनमें बुनियादी धार्मिक स्वतंत्रता को प्रभावित करने वाला यह प्रावधान भी शामिल है कि वक्फ करने के लिए, संबंधित शख्श का पांच साल से धर्मपालक मुसलमान रहा होना जरूरी है। इसी प्रकार, एक और महत्वपूर्ण मुद्दा नये कानून में जिलाधीश को वक्फ संपत्तियों के दर्जे के संबंध में निर्णय के तमाम अधिकार सौंपे जाने से लेकर, किसी संपत्ति को लेकर विवाद खड़ा किए जाने की सूरत में, जिलाधीश द्वारा अंतिम निर्णय किए जाने तक, उसका वक्फ संपत्ति का दर्जा ही स्थगित हो जाने तक जाता है। बहरहाल, फिलहाल सुप्रीम कोर्ट ने अपने हस्तक्षेप से नये कानून के सबसे आपत्तिजनक तथा समस्यापूर्ण प्रावधानों का अमल स्थगित करा दिया है ।

पृथी दिवस के अवसर पर जनजागरूक्ता कार्यक्रम

भदोही । मंगलवार को पृथी दिवस के अवसर पर वेल्सपन फाउंडेशन फॉर हेल्थ एंड नॉलेज और मानव संसाधन एवम महिला विकास संस्थान के सयुंक्त तत्वाधान मे तुलापुर गांव के गौतम बस्ती में एक जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में गांव के 250 से अधिआयाक महिलाओं, किशोरी और कृषि विभाग से आनंद सिंह ,विवेक दुबे कोटेदार ,राजेश पोस्ट मैन शामिल हुए।

इस कार्यक्रम का उदघाटन करते हुए उन्हों ने कहा की22 अप्रैल को पृथ्वी दिवस मनाया जाता है जिसे मनाए जाने का मुख्य उद्देश्य है की ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाली,महिलाओं को पृथ्वी दिवस के महत्त्व के बारे में प्रकाश डाला और बताया सभी लोगो को जैविक खेती और पर्यावरण के बारे में जागरूक किया । पुष्पा जी समूह सखी ने महिलाओ को एनआरएलएम के बैठक में स्वास्थ के मुद्दे के बारे मे सचेत होना जरूरी है बताया और की हम लोग इस समय महिलाओ मे सर्वाईकल कैंसर और ब्रेस्ट कैंसर बहुत तेजी से बढ़ रहा है महिलाओ को इसका कोई भी लक्षन दिखे तो हिचकिचाना नहीं चाहिए समय पर इलाज करवाना बहुत जरुरी है और समय पर इलाज हो जाय तो महिलाओ और किशोरियों को कठिनायिओ का सामना ना करना पड़े। महिलाओं को रूढ़िवादी सोच को बदलना होंगा की महिला स्वास्थ और हाईजीन पर जागरूक किया गया ।

इस कार्यक्रम में महिला और किशोरियों के साथ पृथ्वी दिवस के विषय पर विचार, संस्कृतिक एवं खेल संबधी गतिविधियों के माध्यम से किया गया।

इस अवसर पर संस्था से उमाशंकर , कर्म बलि ,केशा ,मीरा , रीता सिंह इत्यादि ने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम का संचालन उमा शंकर तथा धन्यवाद ज्ञापन सरिता मौर्या देवी ने किया।

ट्रांजिट हॉस्टल के नए आवासीय ब्लॉक व एनआईसी सभागार के सौंदयीर्करण डिजीटलीकरण का लोकार्पण संपन्न

भदोही । मंगलवार को ट्रांजिट हॉस्टल/ऑफिसर्स कॉलोनी के नए आवासीय ब्लॉक व कलेक्ट्रेट एनआईसी सभागार के सौंदयीर्करण डिजीटलीकरण का मा सांसद डॉ विनोद बिंद ,मा जिला पंचायत अध्यक्ष अनिरुद्ध त्रिपाठी, मा विधायक औराई दीनानाथ भास्कर, ज्ञानपुर विपुल दुबे, भाजपा जिलाध्यक्ष दीपक मिश्रा ,जिलाधिकारी विशाल सिंह द्वारा लोकार्पण किया गया।

मुख्य विकास अधिकारी डॉ शिवाकांत द्विवेदी ने बताया कि ट्रांसिट हॉस्टल में 8 यूनिट 2 मंजिला 01 ब्लॉक का निर्माण कार्य रू157.24 लाख की लागत से पूर्ण हुआ है।

अधिकारियों को आवासीय व्यवस्था मिलने से जनहित में और प्रभावी ढंग से अधिकारी कार्य कर सकेंगे।अपर जिलाधिकारी कुंवर वीरेंद्र मौर्य एवं जिला सूचना विज्ञान अधिकारी अभिषेक मिश्रा ने बताया कि कलेक्ट्रेट स्थित एन आई सी सभागार को और अधिक बड़ा करते हुए सौंदर्यीकरण व डिजिटलीकरण किया गया है जिससे जनहित में शासन की नीतियों को वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के द्वारा जनहित में सुगमता के साथ संपादित किया जा सकेगा।

अक्षय तृतीया पर बाल विवाह रोकने को हुआ विशेष जागरूकता अभियान

- बाल विवाह निषेध समिति की बैठक
- समाज को किया गया सतर्क

अखंड भारत संदेश

बाल विवाह पर चर्चा करते अधिकारीगण

चित्रकूट। अक्षय तृतीया जैसे शुभ पर्व के मौके पर नाबालिग बच्चों की शादियों की संभावनाओं को देखते हुए बाल विवाह प्रतिषेध समिति के तत्वावधान में वन स्टॉप सेंटर चित्रकूट में एक महत्वपूर्ण बैठक की गई। बैठक डीएम शिवशरणप्पा जीएन द्वारा गठित समिति के निर्देश पर व जिला प्रोबेशन अधिकारी पंकज कुमार मिश्रा के मार्गदर्शन में हुई।

बैठक में कहा कि अक्षय तृतीया का धार्मिक महत्व है और इस दिन अनेक शुभ कार्य जैसे विवाह आदि का आयोजन होता है। लेकिन इसी आड़ में बाल विवाह की घटनाएं भी सामने आती हैं, जो न केवल अवैध हैं बल्कि समाज के लिए गंभीर खतरे का संकेत भी देती हैं। बाल विवाह एक दंडनीय अपराध है, जिसके लिए दो वर्ष तक की सजा और एक लाख रुपये तक का जुमार्ना निर्धारित है। बैठक में निर्णय लिया गया कि धर्मशाला, लॉज, मंदिर, गुरुद्वारा, विवाह स्थलों के संचालकों, कर्मकांडी ब्राह्मण, नाई, माली, बैंड पार्टी को स्पष्ट निर्देश दिए जाएं कि किसी भी विवाह में लड़की की उम्र 18 और लड़के की उम्र 21 वर्ष से कम होने की स्थिति में सेवा प्रदान न करें। बैठक में वन स्टॉप सेंटर से रंजीता द्विवेदी, राकेश माथुर, मीनू सिंह, अर्चना साहू, बाल संरक्षण अधिकारी डॉ सौरभ सिंह समेत अन्य मौजूद रहे।

अजय राज त्रिपाठी ने पूर्व मुख्यमंत्री को दिया चित्रकूट आने का न्योता

- छात्र राजनीति से सियासी सरगर्मी तक

अखंड भारत संदेश

पूर्व सीएम को साइकिल की प्रतीकात्मक कलाकृति भेंट करते हुए

मऊ (चित्रकूट)। नगर पंचायत मऊ निवासी समाजवादी पार्टी यूथ बिग्रेड के प्रदेश सचिव एवं लखनऊ विश्वविद्यालय के छात्र नेता अजय राज त्रिपाठी ने बीते दिन सपा सुप्रीमो व पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव से भेंट कर उन्हें चित्रकूट आने का औपचारिक निमंत्रण दिया। यह मुलाकात इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व उपाध्यक्ष अदील हमजा के आवास पर हुई, जहां एक कार्यक्रम के दौरान सपा मुखिया पहुंचे थे।

अजय राज त्रिपाठी ने बताया कि इस मौके पर उन्होंने चित्रकूट जनपद की प्रमुख जन समस्याओं, युवाओं की स्थिति और क्षेत्र की राजनीतिक एवं सामाजिक चुनौतियों से सपा अध्यक्ष को अवगत कराया। साथ ही यह भी कहा कि समाजवादी पार्टी के कार्यकर्ता जिले में पूरी निष्ठा के साथ संगठन को मजबूत कर रहे हैं और आमजन की समस्याओं को लेकर जमीनी स्तर पर संघर्षरत हैं। अजय ने इस दौरान पूर्व मुख्यमंत्री को चित्रकूट के लोगों की ओर से उम्मीदों का प्रतीक मानते हुए साइकिल की प्रतीकात्मक कलाकृति भेंट की और उनके चित्रकूट आगमन की विनम्र अपील की। अखिलेश यादव ने युवा कार्यकताओं की सक्रियता की सराहना करते हुए कहा कि पार्टी को जमीनी स्तर पर संगठित और प्रभावी बनाने में युवाओं की भूमिका सबसे अहम है। उन्होंने सभी कार्यकताओं से पूरी ऊर्जा के साथ जुटने का आह्वान किया।

लोकतंत्र की दीवार पर दरार : सवालों के सलीब पर चित्रकूट पुलिस

निरंजन पाण्डेय

- वर्दी नशे में थी व न्याय वीआईपी पास पर
- भाजपा के सुशासन पर उठे सवाल
- आठ साल बेमिसाल, भाजपाई बेहाल?

चित्रकूट। जिले की मऊ तहसील की एक आम रात, लेकिन पुलिस चौकी पर वो सबकुछ हुआ जो लोकतंत्र के लिए एक खतरनाक संकेत है। रविवार की रात करीब 11 बजे, मऊ थाना क्षेत्र में वदीर्धारी शराब के नशे में गश्त पर निकले। कहते हैं, पुलिस डर की जगह सुरक्षा का पर्याय होती है, लेकिन उस रात सुरक्षा नहीं, सत्ता और शराब का गुरूर बोल रहा था। घटना के केंद्र में है आदित्य त्रिपाठी, भाजपा नेता संदीप त्रिपाठी का 17 वर्षीय बेटा, जो अपनी बाइक से घर लौट रहा था। रास्ते में नशे में चूर दरोगा और सिपाही जिसने उसे रोका, बहस की और कथित तौर पर थप्पड़ मारते हुए थाने ले गए। आरोप तो यहां तक है कि थाने में उसे बंधक बनाकर बेरहमी से पीटा गया, जिससे उसका हाथ टूट गया।

लेकिन कहानी यहां खत्म नहीं होती। जैसे ही यह खबर पिता तक पहुंची, राजनीति की आग सुलग उठी। पूर्व विधायक आनंद शुक्ला सैकड़ों समर्थकों के साथ आधी रात को थाने पहुंच गए-घेराव, नारेबाजी, दबाव- और तभी पुलिस एक्शन में आई। आधी रात को मेडिकल जांच, लाइनहाजिरी, और एक्शन की झलक दिखाई दी। पर सवाल बड़ा है- अगर आदित्य किसी आम किसान या मजदूर का बेटा होता तो क्या कार्रवाई की रफ्तार इतनी तेज होती? क्या पूर्व विधायक की गैर मौजूदगी में भी एफआईआर दर्ज होती? सच्चाई ये है कि सिपाही व दरोगा को बस लाइन हाजिर किया गया, जबकि भाजपा नेता व उनके 40 समर्थकों पर मुकदमा दर्ज हुआ। विपक्ष ने सोशल मीडिया पर वीडियो वायरल होते ही सरकार को घेरना शुरू कर दिया। सवाल पूछे जा रहे हैं कि अब कहां है भाजपा का सेवा सुरक्षा व सुशासन? यह घटना सिर्फ एक किशोर की नहीं, लोकतंत्र की उस दीवार पर लगी दरार है, जिसमें इंसाफ अब शायद वीआईपी कार्ड दिखाने पर ही मिलता है। आम आदमी के हिस्से में आता है सिर्फ दर्द, डर और खामोशी। क्या अब लोकतंत्र में भी वीआईपी पास होना जरूरी है? वहीं एएसपी ने बताया कि पुलिस निष्पक्ष जांच कर रही है।

चित्रकूट की सड़कों पर खनन माफिया का कब्जा, प्रशासन खामोश

- राजापुर-लालता मार्ग बना मौत का हाइवे
- विरोध करने पर हत्या का लाइसेंस?

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। राजापुर से लालता मार्ग पर खोहरा बिजली पावर हाउस के पास बना बालू भंडारण क्षेत्र अब जानलेवा जोन बन चुका है। यमुना नदी के बरुवा एहतमाली खनन पट्टा (गाटा संख्या 302/1) से अवैध तरीके से निकाले गए बालू का यह भंडारण न केवल एनजीटी व पर्यावरण मानकों का खुला उल्लंघन है, बल्कि स्थानीय जनता के जीवन पर सीधा खतरा बन गया है। सड़क किनारे बेतरतीब ढंग से रखे बालू के अंबारों से उड़ती धूल आंखों में घुसती है और आए दिन यहां दुर्घटनाएं होती हैं।

बुंदेलखंड राज्य निर्माण संघर्ष समिति के जिलाध्यक्ष शिवसागर पांडेय जब इस अवैधता के खिलाफ आवाज उठाते हैं, तो 8 अप्रैल को ट्रक (यूपी 78एफएन 1428) से उनकी खड़ी डिजायर गाड़ी में जानबूझकर टक्कर मार दी जाती है। इस हमले में शिवसागर पांडेय व उनकी पत्नी श्रीमती रामदेवी गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं। राजापुर से प्रयागराज और फिर पीजीआई लखनऊ तक इलाज चलता है। ट्रक ड्राइवर मौके से फरार हो जाता है और स्थानीय दबंग खुद को सपा मुखिया अखिलेश यादव का करीबी बताते हुए धमकियां देते हैं। पांडेय ने जिलाधिकारी को ज्ञापन सौंपते हुए मांग की है कि उक्त खनन पट्टा और अवैध भंडारण का लाइसेंस तत्काल निरस्त किया जाए और दोषियों पर सख्त कानूनी कार्रवाई हो। कहा कि अगर इसपर प्रशासन ने जल्द हस्तक्षेप नहीं किया, तो जनता का आक्रोश फूट पड़ेगा।

23 अप्रैल को आएंगे विधान परिषद की समिति सभापति

चित्रकूट। उत्तर प्रदेश विधान परिषद की वित्तीय एवं प्रशासकीय विलम्ब समिति के सभापति पवन कुमार सिंह 23 अप्रैल को चित्रकूट के भ्रमण पर आ रहे हैं। इस मौके पर कलेक्ट्रेट सभागार में एक अहम बैठक की जाएगी, जिसमें विगत तीन वर्षों की वित्तीय पत्रावलियों के निस्तारण की समीक्षा की जाएगी। यह सूचना डीएम शिवशरणप्पा जीएन ने दी। बताया कि सभापति पवन कुमार सिंह की अध्यक्षता में होने वाली बैठक में जनपद के समस्त विभागीय अधिकारी भाग लेंगे। बैठक में सभी कार्यालयों द्वारा अपने-अपने विभाग की वित्तीय पत्रावलियों के निस्तारण का बिंदुवार विवरण प्रस्तुत करना अनिवार्य किया गया है।

राष्ट्रीय लोक अदालत को लेकर प्रशासनिक अधिकारियों की अहम बैठक सम्पन्न

- 10 मई को होगी लोक अदालत

अखंड भारत संदेश

लोक अदालत में बैठे अधिकारीगण

चित्रकूट। राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण एवं उत्तर प्रदेश राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण, लखनऊ के निदेर्शानुसार आगामी 10 मई को होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाने के उद्देश्य से दिनांक 22 अप्रैल को चतुर्थ चरण की बैठक हुई। यह बैठक जनपद न्यायाधीश/अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण चित्रकूट राकेश कुमार त्रिपाठी के निर्देशन में तथा राष्ट्रीय लोक अदालत के नोडल अधिकारी/विशेष न्यायाधीश एससी/एस.टी. एक्ट राममणि पाठक की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की सचिव एवं अपर जिला जज श्रीमती नीलू मैनवाल ने बताया कि लोक अदालत में अधिक से अधिक वादों का निस्तारण किया जाना है। इस संबंध में विभिन्न विभागों से अपेक्षा की गई कि वे अपने अधीन लंबित मामलों की पहचान कर उन्हें लोक अदालत के माध्यम से सुलझाने की दिशा में कार्य करें। बैठक में जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी बीके शर्मा, जिला आबकारी अधिकारी अखिलेन्द्र बहादुर सिंह, दुग्ध विभाग के जगदीश चन्द्र पाण्डेय, समाज कल्याण अधिकारी ज्ञानेन्द्र सिंह भदौरिया, अग्निशमन अधिकारी पवन त्यागी, मत्स्य विभाग से भानू चन्द्रा, सूचना विभाग के सुरेन्द्र कुमार समेत अन्य मौजूद रहे।

19 क्वार्टर अवैध देशी शराब समेत एक गिरफ्तार

चित्रकूट। जिले में अवैध शराब के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान को एक और सफलता मिली है। थाना राजापुर पुलिस टीम ने गनीवां चौकी क्षेत्र से 19 क्वार्टर देशी शराब के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है। यह कार्रवाई एसपी अरुण कुमार सिंह के निर्देश व थानाध्यक्ष राजापुर प्रवीण सिंह के मार्गदर्शन में की गई। चौकी प्रभारी दारोगा यदुवीर सिंह एवं उनकी टीम ने ग्राम रमपुरिया खुर्द, थाना रैपुरा निवासी शारदा प्रसाद रैदास पुत्र रामबाबू को संदिग्ध परिस्थिति में पकड़ा। तलाशी लेने पर उसके पास से 19 क्वार्टर अवैध देशी शराबह्लह्ल बरामद की गई। पुलिस आरोपी से पूछताछ कर यह पता लगाने का प्रयास कर रही है कि वह यह शराब कहां से ला रहा था और किसे सप्लाई करने वाला था। गिरफ्तारी करने वाली टीम में दारोगा यदुवीर सिंह, चौकी प्रभारी गनीवां सिपाही रामकेश कुशवाहा, राहुल दीक्षित शामिल रहे।

24 अप्रैल से चलाया जाएगा टीडी टीकाकरण अभियान

चित्रकूट। प्रदेश में डिप्थीरिया रोग के बढ़ते मामलों को देखते हुए स्वास्थ्य विभाग ने विशेष सावधानी बरतते हुए 24 अप्रैल से 10 मई तक स्कूल आधारित टीडी (टेटनस-डिप्थीरिया) टीकाकरण अभियान चलाने का निर्णय लिया है। यह अभियान विश्व टीकाकरण सप्ताह के अंतर्गत सोमवार, मंगलवार, गुरुवार एवं शुक्रवार को होगा। सीएमओ डॉ भूपेश द्विवेदी ने बताया कि अभियान में जिले के 1698 प्राथमिक स्कूलों में कक्षा-5 के 21,812 बच्चे तथा 114 माध्यमिक विद्यालयों में कक्षा-10 के 13,209 किशोर-किशोरियों को चिन्हित किया गया है, जिन्हें उनकी उम्र के अनुसार टीडी-10 व टीडी-16 वैक्सीन दी जाएगी। डॉ द्विवेदी ने बताया कि यह टीकाकरण अभियान सरकारी, सहायता प्राप्त, प्राइवेट स्कूलों के साथ-साथ मदरसों और आंगनबाड़ी केंद्रों में भी चलाया जाएगा। विशेष निर्देश दिए गए हैं कि जिन विद्यार्थियों का पूर्व में टीडी टीकाकरण नहीं हुआ है, उन्हें प्राथमिकता के साथ वैक्सीन दी जाए।

चित्रकूट में वन नेशन, वन इलेक्शन पर नारी संगोष्ठी

- नारी शक्ति बनी जन-जागरण की अग्रदूत

अखंड भारत संदेश

नारी संगोष्ठी पर मौजूद महिलाएं

चित्रकूट। धर्मनगरी में वन नेशन, वन इलेक्शन को लेकर आयोजित विचार संगोष्ठी एक ऐतिहासिक मंच बन गई, जिसमें सैकड़ों महिलाओं की भागीदारी ने इसे जन-जागरण अभियान में तब्दील कर दिया।

मुख्य अतिथि एवं भाजपा नेता, प्रयागराज की पूर्व महापौर अभिलाषा गुप्ता नंदी ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा कि हर बड़े बदलाव में महिलाओं की भूमिका निर्णायक रही है। एक साथ चुनाव का यह विचार लोकतंत्र को मजबूत करने की दिशा में बड़ा कदम है, और इसमें नारी शक्ति की भागीदारी सबसे अहम होगी। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहीं डा प्रमिला मिश्रा ने इसे संसाधनों की बचत और स्थिर शासन की दिशा में आवश्यक कदम बताया। विशिष्ट अतिथि रंजना उपाध्याय ने इसे केंद्र सरकार की दूरदर्शी नीति का परिणाम बताते हुए महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता के नए द्वार खोलने वाला बताया। कार्यक्रम की संयोजिका दिव्या त्रिपाठी ने सैकड़ों महिलाओं की उपस्थिति को कार्यक्रम की सफलता का प्रतीक बताया और कहा कि अब नारी शक्ति परिवर्तन की सूत्रधार बन चुकी है। इस मौके पर अंजू वर्मा, राजेश्वरी द्विवेदी, अर्चना सिंह, साधना सिंह और किरण सहित कई प्रमुख महिलाएं मौजूद रहीं।

चित्रकूट को पर्यटन के क्षेत्र में एक और सौगात गुंता बांध बनेगा इको-टूरिज्म हॉटस्पॉट

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिले में पर्यटन को नया आयाम देते हुए रैपुरा के गुंता बांध को पर्यटक स्थल के रूप में विकसित करने की तैयारी शुरू हो गई है। प्राकृतिक सुंदरता से भरपूर इस जलाशय को अब पर्यटन के मानचित्र पर एक नई पहचान मिलने जा रही है। उत्तर प्रदेश पर्यटन विभाग द्वारा गठित इको इको टूरिज्म बोर्ड के तहत इसे इको-टूरिज्म स्थल के रूप में शामिल किया गया है।

क्षेत्रीय पर्यटन अधिकारी अनुपम श्रीवास्तव ने बताया कि प्रदेशभर के चयनित इको टूरिज्म स्थलों पर विकास कार्यों हेतु प्रस्ताव पारित किए गए हैं, जिनमें चित्रकूट का गुंता बांध भी शामिल है। प्रस्तावित योजनाओं में यहां सुनियोजित पार्क, सोलर लाइट्स, और पर्यटकों के लिए आकर्षक अवस्थापनाएं बनाई जाएंगी, जिससे यह स्थान न केवल स्थानीय नागरिकों के लिए विश्राम स्थल बनेगा, बल्कि बाहर से आने वाले पर्यटकों के लिए भी एक आकर्षक डेस्टिनेशन बन सकेगा। गुंता बांध का कायाकल्प न केवल जिले के पर्यावरणीय पर्यटन को बढ़ावा देगा, बल्कि इससे स्थानीय रोजगार को भी नई दिशा मिलेगी। ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गति मिलेगी और युवाओं को स्थानीय स्तर पर अवसर मिल सकेंगे। यह पहल न केवल पर्यावरण-संरक्षण का उदाहरण बनेगी, बल्कि चित्रकूट को उत्तर प्रदेश के इको-टूरिज्म मानचित्र पर एक नई पहचान भी दिलाएगी।

बकरी पालन योजना में पात्रों को मिलेगा अनुदान 12 लोगों का होगा चयन

चित्रकूट। राज्य सरकार ग्रामीण आजीविका को सशक्त करने की दिशा में एक और कदम बढ़ाते हुए चालू वित्तीय वर्ष 2025-26 में बकरी पालन योजना (राष्ट्रीय योजना) में पात्र लाभार्थियों को अनुदान देने जा रही है। मुख्य पशुचिकित्साधिकारी डॉ एसके पाण्डेय ने बताया कि निदेशक, प्रशासन एवं विकास, पशुपालन विभाग, लखनऊ के निर्देश पर चित्रकूट को कुल 12 लाभार्थियों के चयन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस योजना में सभी जातियों के महिला एवं पुरुष पात्र होंगे, लेकिन विधवा, निराश्रित महिला एवं दिव्यांगजन को प्राथमिकता दी जाएगी। योजना में एक बकरी पालन इकाई पर कुल लागत का 10 प्रतिशत, यानी 4500 रुपये, लाभार्थी को अपने बैंक खाते में जमा करना होगा। डॉ पाण्डेय ने बताया कि योजना से जुड़ी विस्तृत जानकारी एवं आवेदन प्रक्रिया के लिए इच्छुक अभ्यर्थी अपने निकट के पशुचिकित्साधिकारी कार्यालय से संपर्क कर सकते हैं।

पोषण पखवाड़े के समापन पर शिवरामपुर में हुआ स्वास्थ्य जागरूकता का आयोजन

- बच्चों को वितरित की पोषण किट व चॉकलेट
- आंगनबाड़ी कार्यकत्रियों को दिए निर्देश

पोषण पखवाड़े में बैठे अधिकारीगण

चित्रकूट। जिले के विकासखंड कर्वी की ग्राम पंचायत शिवरामपुर में सोमवार को डीएम शिवशरणप्पा जीएन की अध्यक्षता में पोषण पखवाड़े के समापन कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस मौके पर चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से 11 से 19 वर्ष की 149 किशोरियों, 54 गर्भवती महिलाओं तथा 5 वर्ष तक के 327 बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण कराया गया। परीक्षण के साथ-साथ लाभार्थियों को आवश्यक उपचार एवं दवाइयां भी निःशुल्क उपलब्ध कराई गईं। कार्यक्रम के संबंध में जिला कार्यक्रम अधिकारी पीडी विश्वकर्मा ने बताया कि भारत सरकार के निदेर्शानुसार 8 से 22 अप्रैल तक जिले के विभिन्न विकासखंडों में पोषण पखवाड़ा का आयोजन किया गया, जिसमें जीवन के प्रथम 1000 दिवस, पोषण ट्रैकर ऐप से लाभार्थियों को जोड़ना, कुपोषण प्रबंधन के लिए समुदाय को जागरूक करना तथा बच्चों में मोटापे की रोकथाम प्रमुख थीम रहीं। जिसमे जिले की आठ ग्राम पंचायतों में पोषण रैली, जन जागरूकता अभियान, एनीमिया कैंप, गर्भवती महिलाओं की जांच तथा सैम एवं मैम बच्चों की विशेष चिकित्सा की गई और पोषण किट वितरित की गईं।

सीडीओ अमृतलाल कौर ने ग्रामवासियों को संबोधित करते हुए कहा कि स्वास्थ्य एवं पोषण के प्रति जागरूक रहना सभी की जिम्मेदारी है। निर्देश दिया कि कोई भी बच्चा या बच्ची शिक्षा से वंचित न रह जाए, इसके लिए माता-पिता को प्रेरित करें और बच्चों को स्कूल भेजें। इस मौके पर सीडीपीओ शहर बीएल गुप्ता, सीडीपीओ पहाड़ी महेन्द्र पटेल, ग्राम प्रधान शिवरामपुर, आरबीएसके चिकित्साधिकारी सुधीर कुमार, डीसी पोषण आशुतोष मिश्रा, बीसी शहर हरेन्द्र सहित सभी आंगनबाड़ी कार्यकत्री, सहायिका, आशा, एएनएम व अन्य मौजूद रहे।

अंतिम दर्शन- भावुक पल

रूह छू लेगी आखिरी झलक

शर्तों को दिया गया अंतिम रूप, जेडी वेंस ने भारत-अमेरिका व्यापार समझौते पर दे दिया बड़ा

अमेरिका

अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने चल रहे टैरिफ युद्ध के बीच कुछ अच्छी खबर की घोषणा की और कहा कि अमेरिका ने भारत के साथ व्यापार समझौते की रूपरेखा को अंतिम रूप दे दिया है। वेंस अपनी पत्नी उषा वेंस और बच्चों के साथ भारत की चार दिवसीय यात्रा पर सोमवार को नई दिल्ली पहुंचे। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा 26 प्रतिशत पारस्परिक टैरिफ लगाए जाने के बाद दोनों देशों के बीच चल रही व्यापार वार्ता पर अपडेट साझा करते हुए उन्होंने कहा कि अमेरिका और भारत ने व्यापार वार्ता के लिए आधिकारिक तौर पर संदर्भ की शर्तों को अंतिम रूप दे दिया है। बाद में ट्रम्प ने 90 दिनों के विराम की घोषणा की, जिससे टैरिफ प्रभावित देशों को अस्थायी राहत मिली, जबकि भारत ने लगातार कहा कि देश के हितों को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए वार्ता जारी है। मेरा मानना है कि यह राष्ट्रपति ट्रंप और प्रधानमंत्री मोदी के दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

मोदी दुनिया के सबसे लोकप्रिय नेता जेडी वेंस ने की पीएम मोदी की तारीफ

अमेरिका

जयपुर में एक कार्यक्रम में अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने कहा कि मेरा मानना ??है कि अमेरिका और भारत मिलकर बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। इसी संदर्भ में मैं आज सहयोग के कुछ क्षेत्रों के बारे में बात करना चाहता हूँ, कि कैसे भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका मिलकर काम कर सकते हैं। अमेरिका के उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने जयपुर में अपने संबोधन में कहा कि मैं भारत की धरोहर और परंपरा को देखकर चकित हूं। वेंस ने अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के नीतिगत दृष्टिकोण पर कहा कि हम एक उज्ज्वल नया विश्व बनाना चाहते हैं। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने कहा कि यह उचित है कि भारत इस साल क्वाड नेताओं के शिखर सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है। स्वतंत्र, खुले, शांतिपूर्ण और समृद्ध हिंद-प्रशांत क्षेत्र में हमारे हित पूरी तरह से संरेखित हैं। जयपुर में एक कार्यक्रम में अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने कहा कि मेरा मानना है कि अमेरिका और भारत मिलकर बहुत कुछ हासिल कर सकते हैं। इसी संदर्भ में मैं आज सहयोग के कुछ क्षेत्रों के बारे में बात करना चाहता हूँ, कि कैसे भारत और संयुक्त राज्य अमेरिका मिलकर काम कर सकते हैं। अमेरिका भारत के साथ पृथ्वी पर किसी भी अन्य देश के साथ किए जाने वाले सैन्य अभ्यास से कहीं अधिक सैन्य अभ्यास करता है। महान चीजों के निर्माण और अत्याधुनिक तकनीकों का आविष्कार करने के लिए हम मिलकर काम कर सकते हैं, जिनकी आने

वाले वर्षों में हमारे दोनों देशों को आवश्यकता होगी। अमेरिकी उपराष्ट्रपति जेडी वेंस ने कहा कि अमेरिका और भारत ने व्यापार वार्ता के लिए आधिकारिक तौर पर संदर्भ की शर्तों को अंतिम रूप दे दिया है...मेरा मानना ??है कि यह राष्ट्रपति ट्रंप और प्रधानमंत्री मोदी के दृष्टिकोण को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है, क्योंकि यह हमारे देशों के बीच फाइनल डील की दिशा में एक रोडमैप तैयार करता है। आपकी तरह, हम भी अपने इतिहास, अपनी संस्कृति, अपने धर्म की सराहना करना चाहते हैं, हम व्यापार करना चाहते हैं और अपने दोस्तों के साथ अच्छे सौदे करना चाहते हैं। हम भविष्य के लिए अपनी दृष्टि को अपनी विरासत की गौरवपूर्ण पहचान पर आधारित करना चाहते हैं, न कि आत्म-घृणा और भय पर... राष्ट्रपति ट्रंप ने इन सभी बातों को बहुत पहले ही समझ लिया है, चाहे वह अमेरिकी इतिहास को मिटाने की कोशिश करने वालों से लड़ने के माध्यम से हो या विदेशों में निष्पक्ष और व्यापार सौदों के समर्थन के माध्यम से... वे दशकों से इन मुद्दों पर लगातार बने हुए हैं।

यूक्रेन शांति समझौते पर ट्रंप ने अब क्या बड़ा यू-टर्न लिया

यूक्रेन

रूस के इस कदम के बाद अमेरिका और पश्चिमी देश मॉस्को के खिलाफ हो गए। रूस पर प्रतिबंध लगाए गए और उसे जी-8 से बाहर का रास्ता भी दिखाया गया। रूस को इंटरनेशनल लेवल पर अलग थलग करने की पूरी कोशिश की गई। इसी घटना के बीच रूस और चीन के बीच नो लिमिट पार्टनरशिप की शुरूआत हुई और वेस्ट का रूस पर शिकंजा कसता चला गया।

एक ऐसी बड़ी खबर निकलकर सामने आ रही है, जिसने पूरी दुनिया की राजनीति को हिलाकर रख दिया है। अमेरिका 2014 से क्रीमिया को यूक्रेन का हिस्सा बताता आया है। अब उसी क्रीमिया को रूस का इंटरनल टैरेटरी यानी आतंरिक हिस्सा मानने जा रा है। ये कोई अफवाह नहीं बल्कि एक रिपोर्ट में ऐसा दावा किया गया है। रिपोर्ट के अनुसार ट्रंप प्रशासन के नए प्रस्ताव में इसे शांति समझौते का अहम हिस्सा बताया गया है। यानी यूक्रेन और रूस के बीच के युद्ध को खत्म करने के लिए अमेरिका अब रूस के इस दावे को मान्यता देने के लिए राजी है।

मार्च 2014 में रूस ने यूक्रेन के क्रीमिया पर कब्जा कर लिया था।

इसे सबसे आसान आक्रमण भी इसलिए कहा जाता है क्योंकि यूक्रेन ने बगैर जंग लड़े ही क्रीमिया दे दिया था और रूसी सैनिकों ने भी रातों-रात ही इस द्वीप पर कब्जा कर लिया था। इसके आठ साल बाद 2022 में पुतिन ने यूक्रेन के दो पूर्वी क्षेत्रों को स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता दे दी। यह भी घोषणा की है कि वह इन क्षेत्रों में यूक्रेन के सैन्य आक्रमण को सुरक्षित रखने में मदद करेगा।

रूस के इस कदम के बाद अमेरिका और पश्चिमी देश मॉस्को के खिलाफ हो गए। रूस पर प्रतिबंध लगाए गए और उसे जी-8 से बाहर का रास्ता भी दिखाया गया। रूस को इंटरनेशनल लेवल पर अलग थलग करने की पूरी कोशिश की गई। इसी घटना के बीच रूस और चीन के बीच नो लिमिट पार्टनरशिप की शुरूआत हुई और वेस्ट का रूस पर शिकंजा कसता चला गया। लेकिन अब 2025 में अमेरिका का ये यू-टर्न दुनिया को हैरान कर रहा है।

अवामी लीग के 25 नेता और कार्यकर्ता जुलूस निकालने के लिए गिरफ्तार

ढाका। बांग्लादेश में एक बार फिर राजनीतिक असंतोष को दबाने की घटना सामने आई है। मुहम्मद यूनुस के नेतृत्व वाली अंतरिम सरकार के तहत पुलिस ने खुलना शहर में अचानक निकाले गए जुलूसों के बाद अवामी लीग और इसके सहयोगी संगठनों के कम से कम 25 नेताओं और कार्यकर्ताओं को गिरफ्तार किया।

गिरफ्तार किए गए लोगों में अवामी लीग, इसकी स्टूडेंट विंग छात्र लीग और युवा संगठन जूबो लीग के सदस्य शामिल हैं। यह जानकारी बांग्लादेश के एक मीडिया आउटलेट यूएनबी ने खुलना मेट्रोपॉलिटन पुलिस के अतिरिक्त उपायुक्त (मीडिया और जनसंपर्क) अहसान हबीब के हवाले से दी।

पुलिस ने रविवार रात को अलग-अलग अभियानों में इन नेताओं और कार्यकताओं को गिरफ्तार किया। यह कार्रवाई खुलना शहर में रविवार सुबह अवामी लीग के एक अचानक निकाले गए जुलूस के बाद की गई।

यह जुलूस अवामी लीग की खुलना जिला इकाई के बैनर तले आयोजित किया गया था। यह शेख हसीना के पतन के बाद क्षेत्र में इस तरह का पहला प्रदर्शन था।

जुलूस के दौरान प्रदर्शनकारियों ने एक बैनर पकड़ा हुआ था, जिसमें शेख मुजीबुर रहमान और शेख हसीना की तस्वीरें थीं।

बांग्लादेश के प्रमुख दैनिक समाचार पत्र प्रोथम आलो के अनुसार, प्रदर्शनकारी नारे लगा रहे थे, जैसे- ह्लशेख हसीना, हमें डर नहीं, हमने सड़कें नहीं छोड़ीं, शेख हसीना की सरकार, बार-बार चाहिए और ह्लशेख हसीना हीरो की तरह लौटेंगी।

यह प्रदर्शन अंतरिम सरकार के ऐसे जुलूसों को रोकने के आदेश के बावजूद निकाला गया था।

एक दिन पहले गृह सलाहकार जहांगीर आलम चौधरी ने कानून प्रवर्तन एजेंसियों को चेतावनी दी थी कि अगर वे अवामी लीग के जुलूसों को रोकने में नाकाम रहे, तो उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी।

बांग्लादेश के एक प्रमुख अखबार, 'द बिजनेस स्टैंडर्ड' ने गृह सलाहकार के हवाले से लिखा, ह्लपुलिस अधिकारियों को निर्देश दिया गया है कि अगर वे इसे ठीक से नियंत्रित नहीं कर पाए, तो उनके खिलाफ कार्रवाई होगी।

खुलना मेट्रोपॉलिटन पुलिस के होरिंटाना थाने के प्रभारी अधिकारी खैरूल बशर ने बताया कि अवामी लीग के लोगों ने एक वाहन से उतरकर अचानक जुलूस निकाला और फिर मौके से फरार हो गए। उन्होंने कहा, यह घटना सुबह जल्दी हुई, जब सड़कें अपेक्षाकृत खाली थीं। पुलिस सक्रिय रूप से उन लोगों की पहचान और हिरासत में लेने के लिए काम कर रही है, जो इसमें शामिल थे।

इसके अलावा, कई स्थानीय मीडिया रिपोर्टों में यह भी बताया गया कि शनिवार रात को शरियतपुर के जयनगर क्षेत्र में स्थानीय अवामी लीग नेताओं और कार्यकताओं ने एक मशाल जुलूस निकाला

अवामी लीग के सोशल मीडिया पेज ने इस जुलूस की पुष्टि करते हुए रविवार रात को एक 45 सेकंड का वीडियो साझा किया। इस वीडियो में सौ से अधिक लोग मशालें लेकर मार्च करते दिखे। कई प्रदर्शनकारियों ने चेहरों पर मास्क पहने थे।

चीन के चंद्र अन्वेषण मॉडल फ्रांस के टूलूज में प्रदर्शित

बीजिंग। चीन का 10वां अंतरिक्ष दिवस 24 अप्रैल को है। दक्षिण फ्रांस का टूलूज शहर 'यूरोपीय अंतरिक्ष शहर' के रूप में जाना जाता है। वहां पर न केवल व्यापक एयरोस्पेस कंपनियां स्थित हैं, बल्कि जनता के लिए खुलने वाला एयरोस्पेस विज्ञान केंद्र भी है। इसका नाम है टूलूज अंतरिक्ष

शहर। चीन के अंतरिक्ष दिवस के अवसर पर चीन का चंद्र अन्वेषण मॉडल फ्रांस के टूलूज स्थित स्पेस सिटी में दिखाया गया।

टूलूज स्पेस सिटी के बाहरी प्रदर्शनी क्षेत्र में छांगअ नंबर चार के लैंडर और यूथू नंबर दो के चंद्र रोवर के मॉडल पर दर्शकों का ध्यान आकर्षित हुआ। बड़ी संख्या में फ्रांसीसी पर्यटकों ने उनके साथ फोटो खींचे।

टूलूज स्पेस सिटी के एयरोस्पेस सूचना के जिम्मेदार व्यक्ति बेंजामिन पीटर ने कहा कि टूलूज स्पेस सिटी ने चीनी राष्ट्रीय अंतरिक्ष प्रशासन के साथ सहयोग संबंध स्थापित किए। चीन ने प्रदर्शन करने के लिए हमें छांगअ-4 उपग्रह का मॉडल दिया था। हम इससे बहुत उत्साहित थे। छांगअ-4 का मिशन इतिहास में चंद्रमा के सुदूरवर्ती भाग पर पहली सफल लैंडिंग है, जिसने छांगअ-6 मिशन के लिए मार्ग प्रशस्त किया। छांगअ-6 ने चंद्रमा के सुदूरवर्ती भाग पर नमूना लिया।

बेंजामिन पीटर ने आशा जताई कि हाल के वर्षों में चीन ने अंतरिक्ष क्षेत्र में बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं।

चीन सक्रियता से अंतरिक्ष यात्रियों को चंद्र पर वापस भेजने की योजना बढ़ाता है और मंगल मिशन व गहन अंतरिक्ष अन्वेषण परियोजना को भी बढ़ावा दे रहा है। दर्शकों को चीन की उपलब्धियों को दिखाना बहुत अहम है।

अखंड भारत संदेश
स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक
स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर
योग सत्संग समिति
द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज
1/6C माधव कुंज
कटरा, प्रयागराज से मुद्रित
एवं
क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान
झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश
से प्रकाशित
सम्पादक
स्वामी श्री योगी सत्यम्
RNI NO. UPHIN/2001/09025
प्रबन्धक
अनूप मिश्रा
ऑफिस मो.:
9565333000
Email:
akhandbharatsandesh1@gmail.com
सभी विवादो का न्याय क्षेत्र
प्रयागराज होगा

खालिस्तानी आतंकी हैप्पी पासिया पर FBI चीफ ने खोला राज!

अमेरिका

संघीय जांच ब्यूरो (एफबीआई) के निदेशक काश पटेल ने खुलासा किया कि आतंकवादी हरप्रीत सिंह उर्फ ??हैप्पी पासिया भारत और अमेरिका दोनों में पुलिस स्टेशनों पर कई हमलों की साजिश रचने में शामिल था। पटेल ने कहा कि पासिया अमेरिका में सक्रिय एक बड़े अंतरराष्ट्रीय आपराधिक गिरोह का हिस्सा माना जाता है। माना जाता है कि पासिया पाकिस्तान की कुख्यात जासूसी एजेंसी आईएसआई और प्रतिबंधित खालिस्तानी आतंकवादी समूह बब्बर खालसा इंटरनेशनल से जुड़ा था। भारत ने अमेरिका से पासिया को प्रत्यर्पित करने का अनुरोध किया है।

पटेल ने एक्स पर लिखा कि पकड़ा गयाः हरप्रीत सिंह, अमेरिका में अवैध रूप से रह रहे एक कथित विदेशी आतंकवादी गिरोह का हिस्सा है,

जिसके बारे में हमारा मानना है कि वह भारत और अमेरिका में पुलिस स्टेशनों पर कई हमलों की योजना बनाने में शामिल था। उन्होंने कहा कि एफबीआई सैक्रामेंटो ने स्थानीय और भारत में अपने सहयोगियों के साथ समन्वय करते हुए जांच की। सभी ने बेहतरीन काम किया है और न्याय होगा।

दक्षिण सूडान की सेना ने नासिर काउंटी पर फिर से कब्जा किया

जुबा। दक्षिण सूडान पीपुल्स डिफेंस फोर्सेज (एसएसपीडीएफ) ने अपर नाइल के नासिर काउंटी पर फिर से कब्जा कर लिया है। इस शहर को उसने मार्च में व्हाइट आर्मी मिलिशिया के साथ भीषण लड़ाई के बाद खो दिया था।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, एसएसपीडीएफ के प्रवक्ता लुल रुआई कोआंग ने रविवार को एक बयान में पुष्टि की कि नासिर के प्रमुख कस्बे पर फिर से कब्जा करना उन सैनिकों के लिए सबसे बड़ा उपहार है, जिन्होंने इसकी रक्षा और पुनः कब्जे के दौरान अपनी जान गंवाई।

मार्च में नासिर में दक्षिण सूडान की सेना और व्हाइट आर्मी के बीच भीषण लड़ाई छिड़ गई थी। व्हाइट आर्मी एक मिलिशिया है, जिसके बारे में सरकार का दावा है कि वह विपक्षी सूडान पीपुल्स लिबरेशन मूवमेंट-इन-ओपोजिशन से जुड़ी हुई है।

एसएसपीडीएफ की हालिया घोषणा पड़ोसी उलांग काउंटी के मुख्यालय पर नियंत्रण का दावा करने के कुछ दिनों बाद आई, जो व्हाइट आर्मी के साथ एक सप्ताह की लड़ाई के बाद हुआ।

इससे पहले अप्रैल में संयुक्त राष्ट्र राहत एजेंसी ने दक्षिण सूडान के अपर नील राज्य में लड़ाई के बाद नागरिकों की सुरक्षा और निर्बाध मानवीय पहुंच सुनिश्चित करने के लिए तेजी से तनाव कम करने का आह्वान किया था, जिसमें मार्च से अब तक 180 से अधिक लोग मारे गए थे।

दक्षिण सूडान के लिए संयुक्त राष्ट्र मानवीय समन्वयक अनीता किकी गेबेहो ने दक्षिण सूडान की राजधानी जुबा में जारी एक बयान में कहा कि सशस्त्र झड़पों और हवाई बमबारी में 250 से अधिक लोग घायल हुए हैं और लगभग 125,000 लोग विस्थापित हुए हैं।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, गेबेहो ने यह भी कहा कि 4 मार्च से शुरू हुई हिंसा में चार मानवीय कार्यकर्ता मारे गए हैं। लूटपाट और विनाश के कारण छह स्वास्थ्य सुविधाओं को बंद करना पड़ा है।

गेबेहो ने कहा, "हिंसा में यह नई बढ़ोतरी जरूर रुकनी चाहिए। यह हिंसा ऐसे समय में हुई है जब मानवीय सहायता के लिए धन कम होता जा रहा है और न केवल ऊपरी नील नदी में, बल्कि पूरे दक्षिण सूडान में तत्काल आवश्यकताएं बढ़ रही हैं। आज, देश भर में 9.3 मिलियन लोगों को सहायता की जरूरत है।"